R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 08 अंक : 07 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 अक्टूबर 2022 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

खुमाड़ में होगा नवाँ महिला महोत्सव

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

रचनात्मक महिला मंच अपना नवाँ महिला महोत्सव शहीद स्मारक, खुमाड़ व राजकीय इंटर कालेज, खुमाड़ में मनायेगा। यह निर्णय रचनात्मक महिला मंच की 23 सिंतबर को हुई त्रैमासिक बैठक में लिया गया। बैठक में बोलते हुए मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने कहा कि अब तक मंच नवम्बर माह के अंतिम रविवार को एक दिवसीय महोत्सव का आयोजन करता आ रहा है। हालांकि, कार्यक्रम की शुरूआत पहले दिन सांयकालीन चर्चाओं से हो जाती है, लेकिन समय के अभाव मे चर्चाऐं पूरी नहीं हो पाती और फिर सांयकालीन सत्र में महिलाओं की भागीदारी भी कम हो पाती है इसलिए यदि हम पहला दिन पूरी तरह चर्चाओं के लिए रखें तो सार्थक चर्चाए हो पाऐंगी। उन्होंने इस वर्ष से महोत्सव को दो दिवसीय करने का प्रस्ताव रखा, बैठक में उपस्थित मंच के सभी सदस्यों ने एक मत से प्रस्ताव का समर्थन किया। बैठक में तय किया गया कि दो दिवसीय महोत्सव के पहले दिन के कार्यक्रम 26 नवम्बर को शहीद स्मारक, खुमाड़ में व दूसरे दिन के आयोजन 27 नवम्बर को राजकीय इंटर कालेज, खुमाड़ मे आयोजित किये जाऐंगे। इस अवसर पर खुमाड़ के साक्षी स्वंय सहायता समूह की सदस्याओं ने कहा कि हम महोत्सव के मुख्य आयोजक बनने के लिए तैयार हैं पर हमें आप

शहीद स्मारक, खुमाड़ में बैठक करते मंच के सदस्य।

सभी के सहयोग की जरूरत है। इस पर बैठक में उपस्थित सदस्याओं ने एक मत से सहयोग का भरोसा दिया।

बैठक में बोलते हुए मंच की सचिव सुनीता देवी ने कहा कि महोत्सव हमारे संगठन कि पहचान है। प्रत्येक सदस्य को इसमें बढ़-चढ़ कर भागीदारी करनी चाहिए। उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी सदस्याओं से महोत्सव की तैयारी शुरू करने की अपील की। इस अवसर पर बोलते हुए मंच की कोषाध्यक्ष अनीता देवी ने कहा कि महोत्सव का इंतजार सभी बहनों को वर्ष भर रहता है, अत: हम सभी पूरे जोश से इसे मनायेंगे। बैठक की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए श्रमयोग टीम की सदस्य आसना ने कहा कि अब खरीफ की फसल के एकत्रीकरण का वक्त करीब है अत: मंच को इस सत्र में फसल एकत्रीकरण के लिए प्रत्येक फसल के दाम तय कर लेने चाहिए। इस पर बैठक में आगामी सत्र के लिए प्रत्येक फसल के दाम तय किए गए। बैठक में सब्जियों के बीजों के वितरण की प्रगति की समीक्षा भी की गई। इस पर बोलते हुए मंच की अध्यक्षा ने कहा कि सभी समूह 31 अक्टूबर तक अपना बीज कोष जमा कर दें। बैठक मे बोलते हुए श्रमयोग के सदस्य अजय ने कहा कि श्रमयोग टीम महोत्सव के आयोजन में मंच की हर तरह की मदद के लिए तैयार है। मंच के द्वारा जो भी निंदेष मिलेंगे, श्रमयोग टीम उसका पालन करेगी। बैठक में अनेक समूहों के पदाधिकारियों, श्रम सखियों व श्रमयोग टीम के सदस्यों ने प्रतिभाग किया। नवाँ महिला महोत्सव पूरे जोश के साथ मनाने के संकल्प के साथ बैठक समाप्त हुई।

रचनात्मक महिला मंच अपनी मांगों को लेकर मुखर

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

रचनात्मक महिला मंच अपनी मांगों को लेकर मुखर बना हुआ है। इस क्रम में 22 सिंतबर के दिन मंच द्वारा खण्ड विकास अधिकारी के माध्यम से ब्लाक प्रमुख को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन के माध्यम से सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र देवायल में स्टाफ की कमी, घर-घर नल योजना के अन्तर्गत लगे नलों में पानी न आना, क्षेत्र के कई गांवों के पक्की सड़क से जुड़े होने के बाद भी उन गांवों तक गैस सिलेण्डर वितरण हेतु गैस सिलेण्डर की गाड़ी न आना व क्षतिग्रस्त सड़क सम्पर्क मार्गो को ठीक करना जैसी माँगे रखी गईं। इस अवसर पर बोलते हुए मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने कहा कि मंच अपनी समस्याओं के लिए निरंतर आंदोलनरत हैं लेकिन हमारी मांगों पर ध्यान नही दिया जा रहा है। उन्होंने कहा यदि हमारी

ज्ञापन सौंपते मंच के सदस्य।

मांगे जल्द ही नही मानी गई तो आंदोलन को और तेज किया जाऐगा। ज्ञापन पर बोलते हुए खण्ड विकास अधिकारी ने कहा कि यह मांगे अलग-अलग विभागों से संबधित है। हम ब्लाक प्रमुख की तरफ से तुरंत समस्याओं के समाधान के लिए संबधित विभागों को पत्र लिखेंगें इस अवसर पर रचनात्मक महिला मंच की सचिव सुनिता देवी, कोषाध्यक्ष अनीता देवी, श्रमसखी अंजू रावत, उमा सती, शीला देवी, देवकी देवी, दीपा देवी, विमला देवी, सहित समूहो की अनेक सदस्याएं व टीम श्रमयोग के सदस्य उपस्थित रहे।

अंकिता व जगदीश को न्याय के लिए सड़को पर लोग

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

उत्तराखंड में ऋषिकेश के पास वनतारा रिर्जोट में कार्यरत अंकिता भण्डारी की हत्या से उत्तराखंड समेत देश भर के संवेदनशील लोग भारी गुस्से में हैं। अंकिता को न्याय के लिए लोग सड़कों पर हैं और इस मामले में सरकार के लापरवाह रवैये से लोगों में भारी नाराजगी है। इस हत्याकांड का मुख्य आरोपी रिर्जोट का मालिक पुलकित आर्य भारतीय जनता पार्टी के नेता विनोद आर्य का बेटा है। इस मामले में पुलकित आर्य के साथ रिर्जोट के मैनेजर सौरभ भास्कर तथा असिस्टेंट मैनेजर अंकित गुप्ता को भी गिरतार किया गया है।

इस हत्याकांड से लोगों में बहुत नाराजगी है। जगह-जगह विरोध जलुस निकाले जा रहे हैं व धरने प्रर्दशन हो रहे हैं। उत्तराखंड महिला मंच की अध्यक्षा कमला पंत ने कहा कि जब तक अंकिता को न्याय नही मिल जाता उत्तराखंड की नारी शक्ति चुप नही बैठेगी। उत्तराखंड महिला मंच समेत अनेक जन संगठन ने 2 अक्टूबर को उत्तराखंड बंद का आव्हान किया है। उत्तराखंड सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन ने कहा कि सर्वोदय मण्डल व उत्तराखंड सद्भावना समिति बंद के पूरी तरह समर्थन में हैं। रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने कहा है कि मंच की प्रत्येक सदस्या अंकिता के साथ हुई वीभत्स घटना से बहुत गुस्से में है। उन्होंने कहा कि सरकार को फास्ट ट्रैक कोर्ट में मामला चलाकर दोषियों को सजा दिलवानी चाहिए। उन्होंने मंच की और से 2 अक्टूबर के बंद को पूर्ण समर्थन दिया।

दूसरा मामला उत्तराखण्ड के सल्ट का है जब 1 सितम्बर को जाति के दम्भ में शादी के कुछ दिन बाद उसकी पत्नी के सौतेले पिता व भाई ने जगदीश की हत्या कर दी थी। जगदीश को न्याय के लिये राज्य में निरन्तर आन्दोलन चल रहा है।

उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी समेत अनेक जन संगठन सड़क पर हैं। पर इस मामले में अभी तक सरकार की चुप्पी नहीं टूटी है। रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने कहा है कि जगदीश की हत्या अपने आप को सभ्य कहने वाले समाज के मुँह पर तमाचा है। उन्होंने कहा कि मंच जगदीश की पत्नी को 1 करोड़ रुपये मुआवजे व नौकरी की माँग करता है। उन्होंने कहा कि सरकार को इस मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलाकर दोशियों को शीघ्र सजा दिलवानी चाहिए।

हमारी पाती

श्रमयोग पत्र के आठवें वर्ष का सातवाँ अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग समुदाय, रचनात्मक महिला मंच, महिला समूहों व बाल मंचो में श्रमयोग पत्र निरन्तर पढ़ा जा रहा है। श्रमयोग समुदाय के सदस्य, महिलायें व बच्चे पत्र में निरन्तर लिख रहे हैं। इस तरह पढ़ने-लिखने की संस्कृति बन रही है और हम सब मिलकर सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को लगातार मजबूत कर रहे हैं।

सितम्बर माह में श्रमयोग के कार्यक्षेत्र में अनेक गतिविधियाँ हुई। रचनात्मक महिला मंच ने अपनी त्रैमासिक बैठक की, जिसमें आगामी 26-27 नवम्बर को आयोजित होने वाले महिला महोत्सव को लेकर अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। महिला महोत्सव के आयोजन को लेकर मंच काफी संजीदा है। इस बार एक बड़ा बदलाव यह है कि महोत्सव जो अब तक मुख्य रूप से एक दिनी आयोजन था उसे बढ़ाकर दो दिन का आयोजन किया जा रहा है। सितम्बर माह में मंच द्वारा अपनी माँगो के लिये ब्लाक प्रमुख को पत्र सौंपा गया। जिस पर कार्यवाही का आश्वासन मिला है। मंच द्वारा किचन गार्डन हेतु अपनी सदस्याओं को बीज उपलब्ध कराये गये व बीज कोष एकत्र किया जा रहा है। श्रम-उत्पाद का भुगतान किया जा रहा है। बाल मंचों की गतिविधियाँ जारी हैं।

उत्तराखण्ड राज्य में एक के बाद एक घटनाओं ने यहाँ के लोगों को झकझोर दिया है। पहले हेलंग में मंदोदरी देवी के साथ राजसत्ता की जोर-जबरदस्ती फिर जातिवादी उन्माद में जगदीश की हत्या और अब ताजा मामला अंकिता की हत्या का है। इन घटनाओं ने उत्तराखण्ड के लोगों को आहत किया है। लोग गुस्से में हैं और सड़को पर हैं। इन तीनों घटनाओं के प्रति राजसत्ता का रवैया बेहद निराशाजनक व लापरवाही से भरा रहा है। ऐसे विषम हालातों में आम जनता का निकल कर सड़कों पर आना उम्मीद जगाता है। राज्यभर की आन्दोलनकारी ताकतें एकजुट हैं। वक्त की जरुरत है कि मंदोदरी देवी, जगदीश व अंकिता को न्याय के लिये आन्दोलन को और तेज किया जाए।

साथियो, श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन मुख्य रुप से पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- ढाई आखर – पृष्ठ 3
- कहानी–पच्चीस चौका डेढ़ सौ – पृष्ठ 4
- मलेरिया, पीलिया व डेंगू से सावधान – पृष्ठ 5
- कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – पृष्ठ 6
- मानव सभ्यताओं का ज्ञान–विज्ञान–8 – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

दक्षिण–पश्चिम मानसून लौट रहा है है। मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य में 01 जून से 30 सितम्बर तक औसत 1128 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। जो सामान्य से लगभग 3 प्रतिशत कम है। राज्य में इस अवधि में सबसे अधिक वर्षा क्रमशः बागेश्वर (2267 मीमी) व चमोली (1196 मीमी) जिलों मे रिकॉर्ड की गई।

अक्टूबर माह-सावधानियाँ

डेंगू का प्रकोप चल रहा है। मच्छरों से बचने के लिये पूरे शरीर को ढकते हुए वस्त्र पहनें। अपने आस–पास मच्छरों को न पनपने दें। यह महीना त्यौहारों का है। बाजार में दूध/खोया/मावा की मिठाइयों को खरीदते समय सावधानी बरतें। मिलावटी सामान से सतर्क रहें। बाहर से घर वापस लौटने पर साबुन से हाथों को धोयें।

अक्टूबर माह में विशेष दिवस

02 अक्टूबर	–	गान्धी जयन्ती
02 अक्टूबर	–	लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती
10 अक्टूबर	–	विश्व मानसिक स्वास्थ दिवस
16 अक्टूबर	–	विश्व खाद्य दिवस
30 अक्टूबर	–	टीम श्रमयोग बैठक दिवस
31 अक्टूबर	–	श्रम सखी बैठक दिवस
31 अक्टूबर	–	राष्ट्रीय एकता दिवस

सम्पादकीय

ईरान व भारत में हुंकार भरती महिलायें

ईरान में महिलाएं हिजाब प्रथा के खिलाफ लड़ रही हैं। हिजाब विरोधी प्रर्दशनों में अब तक 40 से अधिक लोग मारे गए हैं व एक हजार से अधिक लोग गिरफ्तार किए गए हैं। पहले महसा अमिनी और फिर हदीस नजफी को हिजाब का विरोध करने पर मार दिया गया। खबर है कि हदीस नजफी को पुलिस ने 6 गोलिया मार कर मौत के घाट उतार दिया। ईरान में इसका भारी विरोध हो रहा है। महिलाए हिजाब जला रही है और अपनी बाल कटवाकर विरोध दर्ज करा रही है।

1997 कि इस्लामिक क्रांति से पहले ईरान में महिलाओं पर इतनी पाबन्दिया नहीं थीं। महिलाए अपने पहनावे, खान-पान व एक जगह से दुसरी जगह आने जाने के लिए आजाद थीं। इस्लामिक क्रांति के बाद न सिंफ महिलाओं के लिए सिर ढकना अनिर्वाय किया गया बल्कि महिलाओं की शादी की उम्र भी घटा दी गई। महिलाओं के लिए घर से बाहर होने पर शरीर को पूरा ढकने के लिए कोट पहनना अनिर्वाय कर दिया गया। उनको अकेले देश छोड़ने पर पाबंदी लगा दी गई। 2021 में इब्राहिम रईसी के राष्ट्रपति बनने के बाद हिजाब के कानून को और सख्त कर दिया गया। महिलाएं सरकार की इस सख्ती का विरोध कर रही थीं कि माहसा अमीनी की मौत से मामला गरमा गया और औरतें विरोध के लिए सड़क पर आ गई। ईरान मे शुरू हुआ ये आंदोलन अब दुनिया के अन्य देशो मे भी फैल चुका है।

अगर अपने देश की बात करें तो हमारे यहा भी महिलाओं की स्थिति ठीक नही है। उन्हें घरों से लेकर अपने कार्य क्षेत्र मे हिंसा व शोषण का सामना करना पड़ता है। ताजा मामला उत्तराखंड में अंकिता की हत्या का है। अंकिता जैसी बच्चियां पढ़ाई करने के बाद नौकरी प्राप्त करके बेहतर जिंदगी का सपना देखती हैं। लेकिन उन्हें शोषण व अपमान सहन करना पड़ता है। अंकिता के साथ जो कुछ हुआ वह एक अंकिता की नही अनेक अंकिताओं की कहानी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि उत्तराखंड समेत देश भर की महिलाए अंकिता के हत्या के खिलाफ सड़कों पर उतरी। हमारे देश में पर्यटन से संबधित होटलों रिजोर्टो में श्रमकानूनों को सख्ती से लागू करने कर समय आ गया है। दुनियाभर की महिलाओं और संवेदनशील नागिरक समाज के लिए जरूरी है कि वे एक दूसरे से सीखते हुए महिलाओं के शोषण व अपमान के खिलाफ मिल कर आवाज बुलंद करें। दुनियाभर की महिलाओं पर हो रहे इन अत्याचारों की जितनी निन्दा की जाए कम है।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@ gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

बीते दिनों की याद

अनीता देवी
सखी स्वयं सहायता समूह

बैलो के गले की घंटी आज जोर-शोर से गूंज रही थी। यह आवाज पूरे गाँव भर में मानों एक उल्लास का माहौल बना रही थी। एक चिड़िया अपनी आवाज से पूरे गाँव को न्यौता दे रही थी मानो वह अपनी सखियों को बोल रही हो कि हमारे भोजन की तैयारी हो गई है। छोटे बच्चे अपने आँगन में पिट्ठू, बट्टे ऐसे खेल रहे थे, मानो वह कुछ नहीं चाहते इस दुनिया से। घर के बड़े सभी अपने कामों में अस्त-व्यस्त हैं। घर की महिलाएं रसोई के काम में व्यस्त हैं तो पुरुष हल जोतने की तैयारी में लगे हैं। सभी मिल जुलकर प्यार प्रेम से अपने कामों में हैं। खेत मुस्कुरा रहे हैं आज फिर किसी नये बीज से उनके मिलने का मौका आ गया है। पूरे गाँव में चहल पहल! पूरे गाँव में काम में व्यस्त लोग न जाने किस चीज की तैयारी में लगे हैं, कोई रुकता ही नहीं है। आज खेत आपस में बात कर रहे हैं कि तुम्हें आज कौन सा बीज मिला। एक खेत कहता मंडुवा तो दूसरा अदरक, एक कहता झंगोरा तो एक भोली सी आवाज आई गहत। ये सारी बातें खेत के कोनों में लगे ककड़ी के बीज सुन रहे थे। वो नाराज स्वर में आपस में बोले देखो हमारी बात तो कोई कर ही नहीं रहा है।

खेत जोतने के बाद सारी महिलाएं घास काट रही हैं और आपस में बोलती है तीन-तीन भैसें हैं, दो जोड़ी बैल इनके लिए कहा से इतना घास लाऊ? हाँ बहन सही बोल रही हो घर का काम और ऊपर से आजकल हल जोतना, छोटे बच्चे और ये जानवर इन सब कामोंकोकरते-करते ही बूढ़े हो जाएगे। एक ओर से आवाज आई चलो-चलो अभी तो इन सब खेतों में गोबर भी फैंकना है।

तभी मेरी नींद खुली, ये सपना था उन दिनों का जो बीत चुके हैं। आज ये सब बातें दादी-नानी की कहानियाँ हो गई हैं। अब तो घर के आँगन तक ही सब समेट के रख दिया गया है। आज घर के आँगन सूने और उदास से दिखते हैं। सारे खेलों के नाम बदल गए हैं। बैलों की घंटी की आवाज सुनने को कान तरसने लगे है। खेत उदास हतास आपस में बात कर रो रहे हैं। न जाने कहाँ गए वो बीज न जाने कहाँ गई वो सब हरियाली। आज न जाने कहाँ गए वो लोग, न जाने कहाँ गया वो खाने का स्वाद! आज सब लोग खाने के नये नामों को जानते हैं। गहत, मंडुवा, झुंगोरा ये सब नाम तो मानो इतिहास सा बन कर रह गए हैं। मैं तो यही कहूँगी:-

जागो पहाडियों जागो,
झुंगोरा कोदा को पहचानो
कितना भी चाहे कमा लो तुम,
इस महंगाई के जमाने में,
एक दिन तो आना पडेगा
अपने इन पहाड़ो में।

महिला महोत्सव का आगाज

निर्मला देवी, अध्यक्षा
रचनात्मक महिला मंच

साथियों नमस्कार!

आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ कुशल होंगे। साथियों रचनात्मक महिला मंच चुनौतियों से संघर्ष करते हुए तेजी से आगे बढ़ रहा हैं। 23 सितम्बर को शहीद स्मारक खुमाड में महिला मंच की त्रैमसिक बैठक रखी गई। बैठक में समूहों के पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी लोग बड़े उत्साहित थे। आने वाले 26-27 नवम्बर को रचनात्मक महिला मंच का महोत्सव हैं, जिस की तैयारियाँ बडे जोरो से चल रही हैं। इस बार महोत्सव में सद्भावना टीम के साथियों के आने की उम्मीद भी है। ये हमारा नवाँ महिला महोत्सव होगा। सभी के मन में ये विचार है कि सल्ट खुमाड में महिलाओं के महोत्सव को देखने हमें भी जाना हैं। कई लोगों का मेरे लिए फोन आने लगा हैं कि दीदी हमें भी महोत्सव में बुलाना। यह महोत्सव हमारे पहाड़ की संस्कृति को बचाने, गाँव में रहने वालो को मनोबल देने और संगठन में रहने के लिए प्रेरित करता है और यही हमारी पहचान है। हमें सल्ट के सभी गावों में संगठन बनाने हैं और रचनात्मक महिला मंच का विस्तार करना हैं।

असोज आ गया है। पिछले वर्षो में गाँवों में अब तक महिलाओं का घास काटना शुरू हो जाता था, लेकिन मौसम बदलने की वजह से इस वर्ष लेट है। आज कल महिलाएं क्यारियों में बीज बो रही हैं। सल्ट में महिलाएं संगठन के माध्यम से संघर्ष व मेहनत कर के आगे बढ़ रही हैं। जंगली जानवरों की शिकायत हर रोज होती रहती हैं। इस बार मेरे गाँव की सदस्याओं ने बाजार में बहुत सारे बैगन बेचे। ये पूरी तरह महिलाओं की मेहनत है।

हमारे गाँव में पलायन नहीं है

मंजू देवी
भावना स्वयं सहायता समूह, तल्ली भवाली

सभी साथियों को मेरा नमस्कार!

सभी का कहना है कि हर गाँव से लोग पलायन हो गये हैं। लेकिन कोई-कोई गाँव ऐसे हैं, जहाँ अभी पलायन नहीं है, जैसे कि हमारा गाँव तल्ली भवाली । इसमें एक भी परिवार ने पलायन नहीं किया है। एक भी घर में अभी तक ताला नहीं लगा है। तभी तो यहाँ के लोगों को ग्राम प्रधान व कृषि विभाग द्वारा बहुत सहयोग किया जा रहा है। हमें पशुपालन व कृषि विभाग से पालने के लिए बकरी, मुर्गी, गाय इत्यादि मिले हैं। साथ ही चक्की, छोटा ट्रैक्टर, झाड़ियाँ काटने के लिए मशीन, पानी की मोटर इत्यादि उपकरण मिले हैं। इसलिए भाई बहिनों पलायन को रोको हमारे खेत बंजर नहीं रहेंगे। इसी से हम लोग अपने घरों में सुरक्षित रहेंगे। नहीं तो लोग कोरोना के समय बहुत परेशान हो गये थे। क्योंकि दूसरे गाँवों में कुछ लोग घरों को छोड़कर चले गये थे और जब वह घर वापस आये तो उन लोगों के मकान टूट चुके थे। इसलिए पलायन मत करो। बहनों, समूह की ताकत बहुत बड़ी होती है। हमारे यहाँ की सभी महिलाओं ने एक शिव मन्दिर बनाया है। जिसमें सभी महिलाओं का योगदान रहा है और सभी महिलाओं ने जी जान से इसे बनाया है। आप सभी का धन्यवाद।

पहाड़ो को खत्म करता कूड़ा

उमा सती
क्षमता स्वयं सहायता समूह, पुरियाचौड़ा

आप सभी को मेरा नमस्कार!

मैं उमा सती ग्राम पुरियाचौड़ा, क्षमता स्वयं सहायता समूह की कोषाध्यक्ष हूँ। जैसे कि आपको पता है कि मानिला एक सुंदर स्थान है। जहां प्रतिवर्ष लोग गर्मियों में यहां का सुंदर परिदृश्य देखने आते हैं। रतखाल मार्केट पुरियाचौड़ा ग्राम सभा के अंतर्गत आता है, यहां लोगों ने कूड़ा-कचरा करके इसकी सुंदरता को कुछ हद तक कम कर दिया है। लोग कूड़ा इधर-उधर फेंकते रहते हैं, जबकि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें इस तरीके से इस सुंदर जगह की सुंदरता को नष्ट नहीं करना चाहिए। यह सुंदरता हमें प्रकृति से प्राप्त हुई है। इसलिए हम सभी सदस्यों का कहना है कि एक कूड़ेदान की व्यवस्था हो जाए जिससे सारे लोग सारा कचरा उसी में एकत्रित करें और उसको समय-समय पर जलाया जाए। इससे पूरा कचरा एक ही जगह पर रहेगा और वह इधर-उधर नहीं फैलेगा।

हमारा संघर्ष जारी है

भगवती देवी
अध्यक्ष स्वयं सहायता समूह धतुरिखत्ता

सभी भाई बहनों को नमस्कार!

हमारे यहाँ तो समस्याएं लगातार बढ़ती जा रही हैं, बारिश होने से पहले ही लाइट को काट दिया जाता है और पानी, रास्ते व सड़क तो बहुत दूर की बात है। सरकार इन पर काम करे न करे हमारा मंच लगातार श्रमदान करके रास्तों पर काम कर रहा है। जिसके लिए हमारे श्रमयोग के भाईयों और बहनों का लगातार सहयोग रहता है। वो हमारे साथ मिलकर समाज की आवाज सरकार तक पहुँचा रहे हैं। अस्पताल के लिए हमें डेढ़ किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है, लेकिन अस्पताल में कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं है। न स्टाफ है, न दवाई इसके लिए हमें मिलकर लड़ने की आवश्यकता है, और हमारा संघर्ष जारी है

महिला महोत्सव की तैयारिया

सुनीता देवी
सचिव रचनात्मक महिला मंच

इस बार रचनात्मक महिला मंच की बैठक का आयोजन खुमाड़ शहीद स्मारक में किया गया। बैठक मे सभी समूहों के पदाधिकारी उपस्थित रहे, बैठक अपने तय समय सुबह 11 बजे शुरू की गयी। बैठक में हमारे चांच रथखाल एंव झिमार से लगभग 45 से 50 महिलाएं उपस्थित थीं, और भी महिलाएं तैयार थी किंतु साधनों के अभाव में नहीं आ पायीं। हाँलाकि सभी कलस्टर से महिलाएं आयी थी उपस्थित महिलाओं की संख्या लगभग 200 थी जिस संख्या को देखकर सभी उत्साहित थे कि महिला मंच इतना मजबूत और सक्षम होता जा रहा है। बैठक की शुरूआत आपसी परिचय एंव समूह गीत ''दबे पैरों से उजाला आ रहा है'' और बीच में ''लड़ना है भाई ये तो लम्बी लड़ायी है'' से किया गया। बैठक में बीज कोष, ज्ञापन और बैठक का मुख्य विषय महिला महोत्सव पर चर्चा की गयी। तय हुआ की नौंवाँ महोत्सव खुमाड़ इण्टर कॉलेज में आयोजित किया जाएगा। अन्य वर्षो से अलग इस बार महोत्सव दो दिवसीय होगा, जिसमें पहला दिन परिचर्चा का होगा। चर्चा समाप्त होने पर कुछ ओर जनगीत और समूह गान गाये गये, जिसमें कुछ महिलाओं ने स्वयं बनाये हैं। अंत में ''जैता एक दिन तै आलो'' से बैठक समाप्त की गयी।

ढाई आखर..... मुद्दे ही मुद्दे–हम क्या करें !

✍बिजू नेगी

पिछले साल, रचनात्मक महिला मंच द्वारा आयोजित महिला महोत्सव की पूर्व संध्या (27 नवंबर) पर स्थानीय भागीदारों ने चर्चा के लिए ''छुट्टा पशुओं'' का मुद्दा रखा जिनमें गाय–बैल की बात मुख्य थी।

उससे पिछले साल पहाड़ भर में, और पूरे देष में ही, लॉकडाऊन के बाद अपने–अपने यहां के निवासी जो शहरों में रह रहे थे और जिन्हे वहां, पता नही क्यों मगर प्रवासी कामगार कह कर बुलाया जाता था, बड़ी तादाद में अपने–अपने गांवों को जैसे–तैसे करके पहुंचे। वह चिंता का बहुत बड़ा सबब बना मगर उसका हल तो रहा दूर, कोई मजबूत विकल्प भी नहीं बन पाया। पहाड़ों में उन लोगों के घर जरूर थे लेकिन सिवाय कुछ धन्धों के वे कोई स्थाई रोजगार न तो कर पाये, न ही उसकी कोई उम्मीद बन सकी। फिर, उनमें कई थे जो सपरिवार कई सालों से मैदानी शहरों में रह रहे थे, उनके बच्चे थे जो वहां स्कूलों में पढ़ रहे थे। सो जो लोग घर आ गये थे, 2021 के आखिर तक अधिकांश लोग वापस शहरों को लौट गये। ठोस आंकड़े तो नहीं है, लेकिन जो मोटी–मोटी जानकारी है वह यह है कि शहरों को अधिकतर लोग अपनी पुरानी नौकरियों या पदों पर नही लौट पाये और जहां भी उन्हें काम मिला, ज्यादा कर पहले से कम ही तनख्वाहों पर।

तो बेरोजगारी का मुद्दा, जो पहले से चला आ रहा था, वह और विकट हो गया। और महंगाई जो साथ–साथ बढ़ रही थी, उसने भी कहीं से थमने का नाम नही लिया।

इस साल तो मानो जनता से जुड़ी समस्याओं, घटनाओं व काण्डों का एक सिलसिला ही चल पड़ा है जो हमको, स्थानीय या राज्य स्तर पर, स्थानीय समाज की नींव को बुरी तरह से झकझोर रहा है–पहाड़ के नौजवानों के लिए, फौज में जाना सबसे पसंदीदा रोजगार रहा है, जिसमें पैसा तो अच्छा था ही पर साथ ही इज्जत थी और देश के प्रतिफर्ज अदायगी की भूमिका भी। मगर अग्निवीर जैसी योजना ने युवाओं के लिए वह रास्ता एकदम संकीर्ण कर दिया।

उसको कुछ ही दिन हुए थे तो ''घसियारी'' की घटना हुई, जो वास्तव में पहाड़ी जीवन और सीधे–सीधे पहाड़ी औरतों की अस्मिता पर आक्रमण था। इसमें एक बात जो साफ निकल कर आयी वह यह थी कि राज्य सरकार व उसके कारिन्दे सीधे–सीधे जल–विद्युत परियोजना कंपनियों की ओर खड़े, उनकी पैरवी कर रहे थे। इस प्रक्रण ने यह भी साफ कर दिया कि सरकार मुंह से कुछ भी बोले मगर स्थानीय समाज को वह हाशिए पर ही रखना–देखना चाहती है। इस मुद्दे को लेकर कई हफ्तों स्थानीय लोग व राज्य भर में नागर समाज उद्वेलित रहा।

इसके भी कुछ ही दिनों के बाद, यू.के.एस.एस.एस.सी. (UKSSC) भर्ती घोटाला उजागर हुआ। इस घोटाले को एनडीटीवी के रविश कुमार ने तो ''उत्तराखण्ड सगे संबंधी सलैक्षन समिति'' की ही संज्ञा दे डाली! जो बात सामने आयी वह थी कि पिछले कई सालों से विधायकगण, सांसद, मंत्रीगण अपने रिश्तेदारों को किस तरह पिछले दरवाजे से नौकरी पर लगाते आए हैं और कैसे उस पूरी प्रक्रिया में रसूकदार ''मध्यस्थों'' की भूमिका रही है; और वास्तव में सिर्फ भूमिका ही नहीं बल्कि राज्य में नौकरियां व सरकारी ठेके, परियोंजनाएं, वास्तव में उन्हीं तरह के मध्यस्थों के नियंत्रण में हैं। तो यह हाल हैं उनके जिनको हम जन–प्रतिनिधि मानते आए है, जिनको हम ही चुनते आए हैं और जिन्हें आदरपूर्वक ''माननीय'' शब्द से संबोधित करते हैं।

इसी के आगे–पीछे जगदीश हत्याकाण्ड हुआ, जिसने सर्वण वर्ग की लड़की से प्रेम विवाह किया, और जिसके कुछ ही दिनों के बाद लड़की के सौतेले बाप व भाई ने जगदीश की हत्या कर दी। पिछले कुछ सालों में ऐसी घटनाएं पहाड़ों में बहुत बढ़ गयी हैं, और जिनकी जानकारी सोशल मीडिया के मार्फत संज्ञान में आ रही हैं।

और अब ''अंकिता हत्याकाण्ड'' ने पूरे राज्य को हिला के रख दिया है। यह काण्ड, जिसके बारे में अभी हम ठीक से सोचने–कहने के काबिल भी नही हैं, ऊपर लिखे सभी काण्डों की संभवत: पराकाष्ठा है, जिसमें उन काण्डों के सभी पहलू एक–साथ निचोड़ की तरह आ जुड़े हैं।

अब सवाल है, अपनी इन खतरनाक होती परिस्थितियों के बारे में हम क्या सोचते हैं या इनमें अपनी पीछे की या आगे की क्या भूमिका देखते हैं? इन सभी काण्डों का खूब मीडिया फैलाव हुआ, जनता में सख्त रोश फैला, खूब विरोध हुआ, शासन–प्रशासन को ज्ञापन दिए गए, दोषियों पर कार्यवाही या दण्ड देने व कातिलों को फांसी तक देने की मांग पुरजोर तरीके से हुई। लेकिन हमारी पिछली समस्याओं, जैसे छुट्टा पशु समस्या, क्या उसका निदान हो गया है? क्या हम उन पर नजर अभी भी लगाए हैं?

पिछले सभी केसों में, कुछ हफ्ते या गुजर जाने के बाद, जैसे आमभाषा में कहते हैं कि मामला ठंडा पड़ता गया, और आगे की कार्यवाही ''सरकार'' या ''कानून'' पर छोड़ दी गयी है। क्या वाकई ऐसा है? क्या हमने आपस में इस बात पर चर्चा की है कि एक–दो बार का विरोध तो ठीक है लेकिन कैसे हम अपने विरोध की लौ को, एकाएक रोश या हताशा से परे, लंबे समय तक जिलाए रख सकते हैं? क्या इससे आगे बढ़ कर, लोकतंत्र में सब पर वास्तव में लोक–नियंत्रण कैसे हो सकता है? क्या हम अपनी दीर्घकामी नागरिक भूमिका या दायित्व पर विचार कर सकते हैं?

इससे पहले कि सब कुछ हमारे हाथ से निकल जाए!

सद्भावना यात्रा 2022: यात्रा वृतांत–4

हम सबकी है कामना, सद्भावना, सद्भावना

भुवन पाठक, यात्रा संयोजक
दिनांक - 15/05/2022
दन्या, अल्मोड़ा।

दो दिन जैंती सर्वोदय आश्रम में बिताने व आसपास के गांवों में सद्भावना कार्यक्रम करने के पश्चात् आज दन्यां पहुंचे है। अब यात्रा दल थोड़ा व्यवस्थित लग रहा है। वैसे अभी तक किसी अनजान जगह व अनजान लोगों के बीच हम नही पहुँचे हैं। फिर भी लगभग एक सप्ताह बीतने के बाद हमारा दृष्टिकोण तथा विमर्श ज्यादा स्पष्ट हो रहा है। राष्ट्रीय परिवेश के साथ–साथ स्थानीय महत्वपूर्ण सवालों पर संवाद बनता दिख रहा है।

सुबह खूब तरोताजा होकर उठे व कुंजवाल परिवार की मेजबानी व प्रेम ने हमको नयी ऊर्जा प्रदान की। रोज की भांति शानदार भोजन हमें कराया गया। आज चूंकि हमें जाना था तो नाश्ते की जगह भोजन ही किया। देवकी दीदी थोड़ा भावुक थीं, क्योंकि वर्षों की निष्क्रियता तथा उम्र की अधिकता ने उनको कमजोर बना दिया था। यात्रा के दौरान चाहे दो दिन के लिए उनमें नई ऊर्जा व उमंग दिखी। वर्षों बाद उन्होंने पुन: बागेश्वरी चरखे पर कताई की। चूंकि यह परिवार राजनीति से भी जुड़ा है। केदार सिंह कुंजवाल जी के छोटे भाई गोविन्द सिंह कुंजवाल जो कई बार विधायक व मंत्री रहे, इस बार चुनाव हार गये तो उसकी उदासी भी रही होगी। लेकिन सामाजिक तौर पर अधिक सक्रिय नहीं होने के बावजूद खादी व ग्रामोद्योग के कामों के निशान अभी भी संस्था में है, परन्तु 80 व 90 के दशक का दौर निश्चित रूप से अब नहीं होगा।

नाश्ते के बाद देवकी बहन ने यात्रा दल को खादी के वस्त्र भेंट कर रवाना किया। पुन: वापसी का वायदा ले हम लोग सालम के दूसरे ऐतिहासिक गांव दाड़मी को चले। वहां दीवान सिंह बोरा जी बार–बार फोन कर रहे थे। पिछले चार–पाँच दिनों की बारिश ने लोगों का खेतों में काम बढ़ा दिया है। महिलाएं सुबह–सुबह खेतों में धान बुवाई के लिये निकल पड़ती है। यह पहाड़ की परंपरागत खेती का अटूट हिस्सा है। चैत्र मास में बोया जाने वाला धान गोड़ा जाता है तथा झुंगरा व मंडुवा बोने के लिये जमीन में आद (नमी) बनते ही लोग इन तीन–चार दिनों का इस्तेमाल करके बुवाई निपटा रहे हैं।

थोड़ा विलंब से ही सही हम दाड़मी गांव पहुंचे। दीवान दा गांव के बाहर बेसब्री से हमारा इंतजार कर रहे थे लोग कम थे इस बात पर सफाई भी दे रहे थे। असल में हमारे यहाँ कार्यक्रम की सफलता का सबसे बड़ा मानक भीड़ बन गया है और आयोजक हमेशा भीड़ को लेकर अधिक चिंतित दिखाई देते हैं।

दाड़मी आने का खास कारण था कि यह स्व0 प्रताप सिंह बोरा का गांव भी है जो सालम की क्रान्ति के जन नायको में से एक थे। 24–25 अगस्त को जब अंग्रेज सिपाही निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोलियां चला रहे थे तब प्रताप सिंह बोरा की चुनौती ने ही अंग्रेज अधिकारी व सिपाहियों को वापस जाने पर मजबूर किया। यह पूरा का पूरा गांव स्वतंत्रता सेनानियों का गांव है। शायद बहुत कम ऐसे उदाहरण होंगे उत्तराखण्ड में। यह केवल एक ही गांव है जहां से 36 लोग 1942 में जेल गये। सच कहा कि आजादी भीख में नहीं मिली. इनके बलिदान, त्याग व अदम्य साहस से मिली। गांव के सभी पुरूष जेल में डाल दिये गये। महिलाएँ पुलिसिया दमन से बचने के लिये अपने बच्चों व जानवरों के साथ तीन दिनों तक जंगलों में छिपे रहे।

जब अंग्रेज पुलिस कप्तान के नेतृत्व में पुलिस ने गांव के घरों की तलाशी ली तो घर–घर से मुसल (मुसोव) मिलने पर वह घबरा गया। उसे लगा कि यह कोई हथियार है पहाड़ियों का। तो उसने गांव के घरों से मुसल मंगवाकर एक जगह इकट्ठा किया व उनको जला दिया। सिपाहियों व भारतीय अधिकारियों ने समझाने की कोशिश की कि यह हथियार नहीं औजार है, परन्तु वह नहीं माना। पुलिस के गांव से चले जाने के बाद महिलाएँ व बच्चे वापस गांव लौटे। बाद में सरला बहिन भी वहां गयीं, तथा जब तक सत्याग्रही जेल में रहे तब तक सरला बहिन लगातार गांव में जाती रही तथा गरीब लोगों के भोजन आदि का इंतजाम करती रही। शानदार गौरवशाली परंपरा की नई कहानियां सुनने के बाद हम दन्यां को चले।

दन्यां जाने के लिये नया रास्ता जो पिछले 15–20 साल में ही बना है, उसके पहले सालम से दन्यां जाने के लिये पहले अल्मोड़ा जाना पड़ता था जबकि अब पनार नदी को पार कर हम सीधा दन्यां पहुंच जाते हैं। पनार छोटी सी बारामासी नदी है जो पूर्व की तरफ बहते हुये रामेश्वर के पास सरयू नही में मिल जाती है। यह गरम घाटी है, हम लोग जैंती की ठंडी आबोहवा से एकदम गरम घाटी में घुसे थे और हाँ पनार नदी के बारे में कहा जाता है कि इस नदी में रेत में सोना मिलता है और नदियों की रेत से सोना निकालने वाले घुमन्तू समूह यहां आते हैं, और डेरा डालकर रेत से सोना खोजते है। इसी नदी पर स्व0 शमशेर सिंह बिष्ट और उनके साथ राजीव लोचन शाह एक सहकारी जल विद्युत परियोजना बनाना चाहते थे।

पंचेश्वर व टिहरी जैसे बड़े बांधों के विकल्प के रूप में सहकारी (कॉपरेटिव) जल विद्युत परियोजना का सपना काफी आकर्षक लगता था। यह उत्तेजक विचार मूर्त रूप नही ले पाया। परंतु भविष्य खुला है। जब हम लक्ष्मी आश्रम के दन्यां केन्द्र में पहुंचे तो अधिकांश सामाजिक संस्थाओं की तरह यह भी ठंडी पड़ी थी। गतिविधियां बंद हैं। इनको मिलने वाली आर्थिक सहायता, साथ ही आय व उत्पादन का कोई अन्य स्रोत नहीं होने से कार्यकर्ता आर्थिक मंदी के चलते नये कामों में लग गये।

शाम को कुछ साथी कार्यकर्ता (बहिनें) एकत्र हो गयी। एक समय जब राधा बहन के नेतृत्व में स्थानीय महिलाओं ने शराब बंदी का जबरदस्त आन्दोलन चलाया तो यहां महिला कार्यकर्ताओं की टीम खड़ी हो गयी थी। उसके बाद बालवाड़ी कार्यक्रम के माध्यम से दर्जनो महिलाऐं सामाजिक शिक्षण के काम तथा जंगल बचाने के काम से जुड़ गयीं। शाम को स्थानीय दन्यां बाजार में सांस्कृतिक जूलूस व जनगीतों के साथ सद्भावना सभा हुई, जिसमें स्थानीय जल, जंगल व जमीन की बात तथा सामाजिक समता की बात हुई। सभा में स्थानीय कार्यकर्ता तथा नागरिक अच्छी संख्या में जुड़ गये थे। शाम का खाना यात्रा की टीम ने खुद ही बनाया। इस्लाम भाई व रीता बहिन जो जैंती से एक कार्यक्रम के लिए लालकुआँ गये थे, वापस यात्रा दल मे शामिल हो गए हैं। लंबी बस यात्रा तथा दो–दो बैठको के कारण थकान बहुत है तो सभी लोग जल्दी सोना चाहते हैं.....।

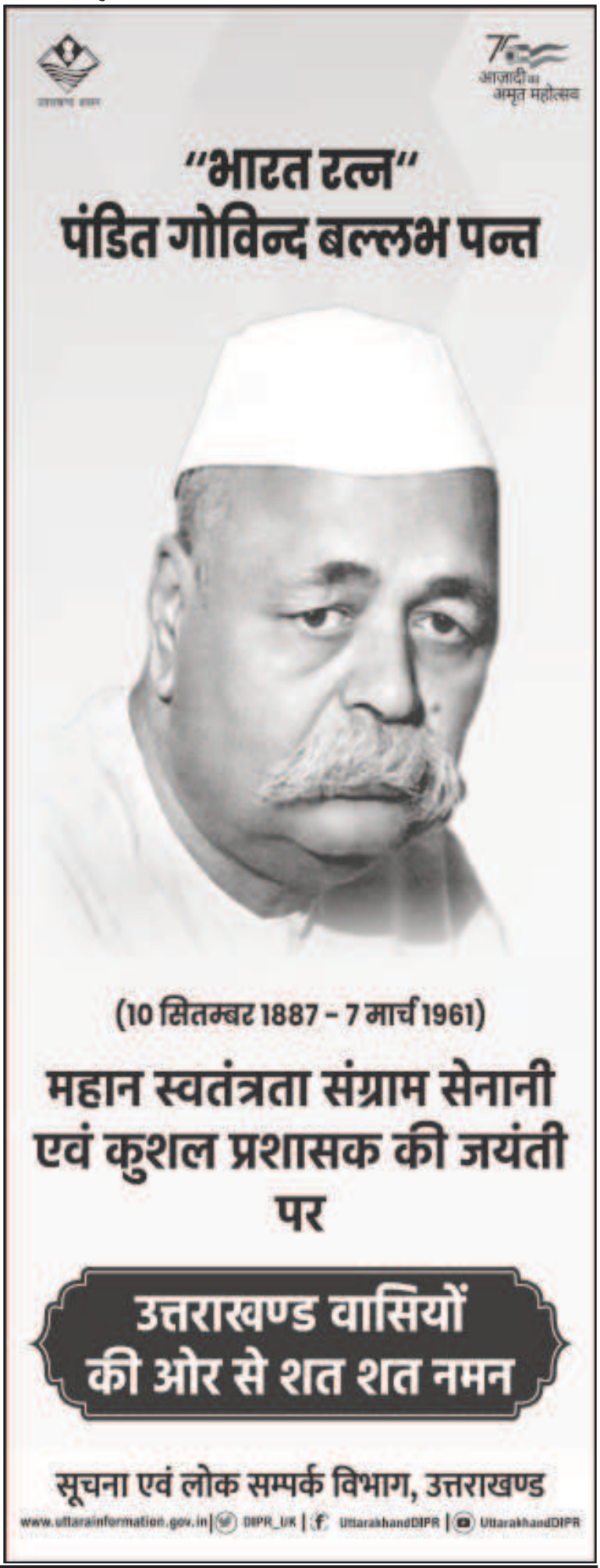

दलित उत्पीड़न अपने आपको श्रेष्ठ कहने वाले भारतीय हिन्दू समाज का क्रूरतम व घिनौना सच है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने लेखन में इस सच को खूब उभारा और दलितों की पीड़ा को आवाज देने वाले लेखक बने। यहाँ प्रस्तुत है उनकी लिखी कहानी 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ'।

पच्चीस चौका डेढ़ सौ

पहली तनख्वाह के रुपए हाथ में थामे सुदीप अभावों के गहरे अंधकार में रोशनी की उम्मीद से भर गया था। एक ऐसी खुशी उसके जिस्म में दिखाई पड़ रही थी जिसे पाने के लिए उसने असंख्य कँटीले झाड़-झंखाड़ों के बीच अपनी राह बनाई थी। हथेली में भींचे रुपयों की गर्मी उसकी रग-रग में उतर गई थी। पहली बार उसने इतने रुपए एक साथ देखे थे। वह वर्तमान में जीना चाहता था। लेकिन भूतकाल उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था। हर पल उसके भीतर वर्तमान और भूत की रस्साकसी चलती रहती थी। अभावों ने कदम-कदम पर उसे छला था। फिर भी उसने स्वयं को किसी तरह बचाकर रखा था। इसीलिए यह मामूली नौकरी भी उसके लिए बड़ी अहमियत रखती थी।

नई-नई नौकरी में छुट्टियाँ मिलना कठिन होता है। उसे भी आसानी से छुट्टी नहीं मिली थी। उसने रविवार की छुट्टियों में अतिरिक्त काम किया था, जिसके बदले उसे दो दिन का अवकाश मिल गया था। वह पहली तनख्वाह मिलने की खुशी अपने माँ-बाप के साथ बाँटना चाहता था। स्कूल की पढ़ाई और नौकरी के बीच समय और हालात की गहरी खाई को वह पाट नहीं सकता था। फिर भी खाई के बीच जो कुछ भी था, उसे सांत्वना देकर उसकी पीड़ा को तो वह कम कर ही सकता था। सुख-दुःख के चंद लम्हे आपस में बाँटकर पीड़ा कम हो जाती है। उसने इस पल के इंतजार में एक लंबा सफर तय किया था। ऐसा सफर जिसमें दिन-रात और मान-अपमान के बीच अंतर ही नहीं था।

शहर से गाँव तक पहुँचने में दो-ढाई घंटे से ज्यादा लग जाते थे। इसीलिए वह सुबह ही निकल पड़ा था। बस अड्डे पर आते ही उसे बस मिल गई थी। बस में काफी भीड़ थी। बड़ी मुश्किल से उसे बैठने की जगह मिल पाई थी। कंडक्टर किसी यात्री पर बिगड़ रहा था, 'इस सामान को उठाओ। छत पर रखो। आने-जाने का रास्ता ही बंद कर दिया है। किसका है यह सामान?' कंडक्टर ने ऊँचे और कर्कश स्वर में पूछा। एक दुबला-पतला-सा ग्रामीण धीमे स्वर में बोला, 'जी, मेरा है।' कंडक्टर ने ग्रामीण के वजूद को तौलते हुए आवाज सख्त करके लगभग दहाड़ते हुए कहा, 'तेरा है तो इसे अपने पास रख। यहाँ रास्ते में क्यों अड़ा दिया है? उठा इसे !'

ग्रामीण ने गिड़गिड़ाकर अजीब-सी मरियल आवाज में कहा, ''साहब ... नजदीक ही उतरना है ..''

सुदीप जब भी किसी को गिड़गिड़ाते देखता है तो उसे अपने पिता जी की छवि याद आने लगती है। ऐसे में उसका पोर-पोर चटखने लगता है। जैसे कोई धीरे-धीरे उसके जिस्म पर आरी चला रहा हो।

उसने कंडक्टर की ओर देखा। कंडक्टर का तोंदियल शरीर कपड़े फाड़कर आने को छटपटा रहा था। बनैले सुअर की तरह उसके चेहरे पर पान से रँगे दाँत, उसकी भव्यता में इजाफा कर रहे थे। सुदीप को लगा जंगली सुअर बस की भीड़ में घुस आया है। उसने सहमकर सहयात्री की ओर देखा तो निरपेक्ष भाव से अपने खयालों में गुम था। सुदीप ने ग्रामीण पर नजर डाली जो अभी तक दयनीयता से उबर नहीं पाया था। उसके भीतर पिता जी की छवि आकार लेने लगी। वह दिन स्मृति में दस्तक देने लगा जब पिता जी उसे लेकर स्कूल में दाखिल कराने ले गए थे। उनकी बस्ती के बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। पता नहीं पिता जी के मन में यह विचार कैसे आया कि उसे स्कूल में भरती कराया जाए। जबकि पूरी बस्ती में पढ़ाई-लिखाई की ओर किसी का ध्यान नहीं था।

पिता जी लंबे-लंबे डग भरकर चल रहे थे। उसे उनके साथ चलने में दौड़ना पड़ता था। उसने मैली-सी एक बदरंग कमीज और पट्टेदार नीकरनुमा कच्छा पहन रखा था। जिसे थोड़ी-थोड़ी देर बाद ऊपर खींचना पड़ता था। स्कूल के बरामदे में पहुँचकर पिता जी पलभर के लिए ठिठके। फिर धीरे-धीरे चलकर इस कमरे से उस कमरे में झाँकने लगे। हर एक कमरे में अँधेरा था। जिसमें बच्चे पढ़ रहे थे। मास्टर कुर्सियों पर उकडूं बैठे बीड़ी पी रहे थे या ऊँघ रहे थे। पिता जी फूलसिंह मास्टर को ढूँढ़ रहे थे। दो-तीन कमरों में झाँकने के बाद एक छोटे से कमरे की ओर मुड़े। उस कमरे में अन्य कमरों से ज्यादा अँधेरा था। फूलसिंह मास्टर अकेले बैठे बीड़ी पी रहे थे।

उन्हें दरवाजे पर देखकर फूलसिंह मास्टर खुद ही बाहर आ गए थे। पिता जी ने मास्टर जी को देखते ही दयनीय स्वर में गिड़गिड़ाकर कहा, ''मास्टर जी , इस जातक (बच्चे) कू अपणी सरण में ले लो। दो अच्छर पढ़ लेगा तो थारी दया ते यो बी आदमी बाण जागा, म्हारा जिनगी बी कुछ सुधर जागी।'' सुदीप पिता जी की उस मुद्रा को कभी भूल नहीं पाया। वे हाथ जोड़कर झुके खड़े थे। फूलसिंह मास्टर ने बीड़ी का टोंटा अँगूठे के इशारे से उछाला और पिता जी को लेकर हेडमास्टर के कमरे में चले गए।

सुदीप का दाखिला हो गया था। पिता जी खुश थे। उनकी इस खुशी में भी वही गिड़गिड़ाहट झलक रही थी। झुक झुककर मास्टर फूलसिंह को सलाम कर रहे थे। बस हिचकोले खा-खाकर रेंग रही थी। आसपास के यात्रियों ने बीड़ी-सिगरेट का धुआँ ऐसे उगलना शुरू कर दिया था। जैसे सभी अपनी-अपनी दुश्चिताओं को धुएँ के बादलों में विलीन कर देंगे। उसने अपने पास की खिड़की का शीशा सरकाया। ताजा हवा की हलकी-हलकी सरसराहट भीतर घुस आई।

उसकी स्मृति में स्कूल के दिन एक के बाद एक लौटकर आने लगे। दूसरी कक्षा में तक आते-आते वह अच्छे विद्यार्थियों में गिना जाने लगा था। तमाम सामाजिक दबावों और भेदभावों के बावजूद वह पूरी लगन से स्कूल जाता रहा। सभी विषयों में वह ठीक-ठाक था। गणित में उसका मन कुछ ज्यादा ही लगता था। मास्टर शिवनारायण मिश्रा ने चौथी कक्षा के बच्चों से पंद्रह तक पहाड़े याद करने के लिए कहा था। लेकिन सुदीप को चौबीस तक पहाड़े पहले से ही अच्छी तरह याद थे। मास्टर शिवनारायण मिश्रा ने शाबासी देते हुए पच्चीस का पहाड़ा याद करने के लिए सुदीप से कहा। स्कूल से घर लौटते ही सुंदीप ने पच्चीस का पहाड़ा याद करना शुरू कर दिया, वह जोर-जोर से ऊँची आवाज में पहाड़ा कंठस्थ करने लगा, पच्चीस ही कम पच्चीस, पच्चीस दूनी पचास, पच्चीस तिया पचहत्तर, पच्चीस चौका सौ... । पिता जी बाहर से थके-हारे लौटे थे। उसे पच्चीस का पहाड़ा रटते देखकर उनके चेहरे पर संतुष्टि-भाव तैर गए थे। थकान भूलकर वे सुदीप के पास बैठ गए थे। वैसे तो उन्हें बीस से आगे गिनती भी नहीं आती थी। लेकिन पच्चीस का पहाड़ा उनकी जिंदगी का अहम पड़ाव था। जिसे वे अनेक बार अलग-अलग लोगों के सामने दोहरा चुके थे। जब भी उस घटना का जिक्र करते थे, उनके चेहरे पर एक अजीब-सा विश्वास चमक उठता था।

सुदीप ने पच्चीस का पहाड़ा दोहराया और जैसे ही पच्चीस चौका सौ कहा, उन्होंने टोका।

''नहीं बेट्टे ... पच्चीस चौका सौ नहीं ... पच्चीस चौका डेढ़ सौ ...'' उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

सुदीप ने चौंककर पिता जी को ओर देखा। समझाने के लहजे में बोला, '' नहीं पिता जी, ... पच्चीस चौका सौ ... यह देखो गणित की किताब में लिखा है।''

''बेट्टे , मुझे किताब क्या दिखावे हैं । मैं तो हरफ (अक्षर) बी ना पिछाणूं। मेरे लेखे तो काला अच्छर भैंस बराबर है। फिर बी इतना तो जरूर जाणूं कि पच्चीस चौका डेढ़ सौ होता है।'' पिता जी ने सहजता से कहा। ''किताब में तो साफ-साफ लिक्खा है-पच्चीस चौका सौ...'' सुदीप ने मासूमियत से कहा ।

''तेरी किताब में गलत बी तो हो सके ... नहीं तो क्या चौधरी झूठ बोल्लेंगे। तेरी किताब से कहीं ठाड्डे (बड़े) आदमी हैं चौधरी जी। उनके धोरे (पास) तो ये मोट्टी-मोट्टी किताबें हैं... वह जो तेरा हेडमास्टर है वो बी पाँव छुए है चौधरी जी के, फेर भला वो गलत बतायेंगे... मास्टर से कहणा सही-सही पढ़ाया करे ...'' पिजा जी ने उखड़ते हुए कहा ।

''पिता जी ... किताब में गलत थोड़े ही लिक्खा है ...'' सुदीप रुआँसा हो गया । ''तू अभी बच्चा है। तू क्या जाणे दुनियादारी। दस साल पहले की बात है तेरे होणे से पहले। तेरी म्हतारी बीमार पड़गी थी। बचने की उम्मेद ना थी। सहर के बड़े डॉक्टर से इलाज करवाया था। सारा खर्चा चौधरी ने ही तो दिया था। पूरा सौ का पत्ता ... यो लंबा लीले (नीले) रंग का लोट (नोट) था। डॉक्टर की फीस, दवाइयाँ सब मिलकर सौ रुपए बणे थे।''

जब तेरी माँ ठीक-ठाक होके चलण-फिरण लगी तो मैं चार महीने बाद चौधरी जी की हवेली में गया। दुआ सलाम के बाद मैत्रे चौधरी जी ते कहा। चौधरी जी मैं तो गरीब आदमी हूँ। थारी मेहरबान्नी से मेरी लुगाई की जान बच गई। वह जी गई वरना मेरे जातक (बच्चे) बिरान हो जात्ते। तमने सौ रुपए दिए ते। उनका हिसाब बता दो। मैं थोड़ा-थोड़ा करके सारा कर्ज चुका दूँगा। एक साथ देणे की मेरी हिम्मत ना है चौधरी जी। चौधरी जी ने कहा, ''मैत्रे तेरे बुरे बखत में मदद करी ती। ईब तू ईमानदारी ते सारा पैसा चुका देना। सौ रुपए पर हर महीने पच्चीस रुपए ब्याज के बनते हैं। चार महीने हो गए हैं। ब्याज ब्याज के हो गए हैं पच्चीस चौका डेढ़ सौ। तू अपणा आदमी है तेरे से ज्यादा क्या लेणा। डेढ़ सौ में से बीस रुपए कम कर दे। बीस रुपए तुझे छोड़ दिए। बचे एक सौ तीस। चार महीने का ब्याज एक सौ तीस अभी दे दे। बाकी रहा मूल जिब होगा दे देणा। महीने के महीने ब्याज देते रहणा। ''

''ईब बता बेट्टे पच्चीस चौका डेढ़ सौ होते हैं या नहीं। चौधरी भले और इज्जत आदमी हैं जो उन्होंने बीस रुपए छोड़ दिए। नहीं तो भला इस जमान्ने में कोई छोड्डे है। अपणे सिव नारायण मास्टर के बाप बड़े मिसिर जी कू ही देख लो। एक धेल्ला बी ना छोड्डे। ऊप्पर ते बिगार (बेगार) अलग ते करावे हैं। जैसे बिगार उनका हक है। दिन भर में गोड्डे टूट जाँ। मजूरी के नाम पे खाल्ली हाथ। ऊप्पर ते गाली अलग। गाली तो ऐसे दें हैं जैसे बेद मंतर पढ़ रहे हों। ''

सुदीप ने पच्चीस का पहाड़ा दोहराया। पच्चीस ही कम पच्ची, पच्चीस दूनी पचास, पच्चीस तिया पचहत्तर, पच्चीस चौका डेढ़ सौ... । अगले दिन कक्षा में मास्टर शिवनारायण मिश्रा ने पच्चीस का पहाड़ा सुनाने के लिए सुदीप को खड़ा कर दिया । सुदीप खड़ा होकर उत्साहपूर्वक पहाड़ा सुनाने लगा। ''पच्चीस ही कम पच्चीस, पच्चीस दूनी पचास, पच्चीस तिया पचहत्तर, पच्चीस चौका डेढ़ सौ ... मास्टर शिवरानायण मिश्रा ने उसे टोका, पच्चीस चौका सौ ...। '' मास्टर जी के टोकने से सुदीप अचानक चुप हो गया और खामोशी से मास्टर का मुँह देखने लगा। मास्टर शिवनारायण मिश्रा कुर्सी पर पैर रखकर उकहूँ बैठे थे। बीड़ी का सुट्टा मारते हुए बोले, ''अबे ! चूहड़े के आगे बोलता क्यूँ नी? भूल गिया क्या!''

सुदीप ने फिर पहाड़ा शुरू किया। स्वाभाविक ढंग से पच्चीस चौका डेढ़ सौ कहा।

''मास्टर शिवनारायण मिश्रा ने डाँटकर कहा, '' अबे ! कालिए, डेढ़ सौ नहीं सौ !...''

सुदीप ने डरते-डरते कहा, ''मास्साब ! पिता जी कहते हैं पच्चीस चौका डेढ़ सौ होवे हैं।'' मास्टर शिवनारायण हत्थे से उखड़ गया। खींचकर एक थप्पड़ उसके गाल पर रसीद किया। आँखें तरेरकर चीखा, ''अबे तेरा बाप इतना बड़ा बिदवान है तो यहाँ क्या अपनी माँ ... (एक क्रिया-जिसे सुसंस्कृत लोग साहित्य में त्याज्य मानते हैं) ... आया है साले, तुम लोगों को चाहे कितना भी लिखाओ, पढ़ाओ... रहोगे वहीं-के-वहीं... दिमाग में कूड़ा-करकट जो भरा है। पढ़ाई-लिखाई के संस्कार तो तुम लोगों में आ ही नहीं सकते। चल बोल ठीक से... पच्चीस चौका सौ... स्कूल में तेरी थोड़ी-सी तारीफ क्या होने लगी पाँव जमीन पर नहीं पड़ते। ऊप्पर से जबान चलावे है। उलटकर जवाब देत्ता है।''

सुदीप ने सुबकते हुए पच्चीस चौका सौ कहा और एक साँस में पूरा पहाड़ा सुना दिया। उस दिन की घटना ने उसके दिमाग में उलझन पैदा कर दी। यदि मास्साब सही कहते हैं तो पिता जी गलत क्यूँ बता रहे हैं। यदि पिता जी सही हैं तो मास्साब क्यूँ गलत बता रहे हैं। पिता जी कहते हैं चौधरी बड़े आदमी हैं, झूठ नहीं बोलते। उसके हृदय में बवंडर उठने लगे।

नर्म और मासूम बालमन पर एक खरोंच पड़ गई थी। जो समय के साथ और गहरा गई थी। किसी ने ठीक ही कहा, मन में गाँठ पड़ जाए तो खोले नहीं खुलती। सोते-जागते, उठते-बैठते, पच्चीस चौका डेढ़ सौ उसे परेशान करने लगा। बालमन की यह खरोंच ग्रंथि बन गई थी। जब भी पच्चीस की संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिता जी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिवनारायण मिश्रा का गाली-गलौज करता लाल-लाल गुस्सैल चेहरा। दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अँधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे। जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे।

बस अड्डे से थोड़ा पहले एक बड़ा सा गति अवरोधक था। जिसके कारण अचानक ब्रेक लगने से बस में बैठे यात्रियों को झटका लगा। कई लोग तो गिरते-गिरते बचे। झटका लगने से सुदीप की विचार तंद्रा भी टूट गई। उसने जेब को छूकर देखा। तनख्वाह के रुपए जेब में सही सलामत थे। बस गाँव के किनारे रुकी। बस अड्डे के नाम पर दो-एक दुकानें पान-बीड़ी की, एक पेड़ के तने से टिकी पुरानी-सी मेज पर बदरंग आईना रखकर बैठा गाँव का ही बदरू नाई। नाई से थोड़ा हटकर दूसरे पेड़ तले बैठा गाँव का मोची, एक केले अमरूद वाला। बस यही था बस अड्डा।

सुदीप ने बस से नीचे उतरकर आसपास नजर दौड़ाई। बस अड्डे पर कोई विशेष चहल-पहल नहीं थी। इक्का-दुक्का लोग इधर-उधर बैठे थे। वह सीधा घर की ओर चल पड़ा। गाँव के पश्चिमी छोर पर तीस-चालीस घरों की बस्ती में उनका घर था।

दोपहर होने को आई थी। सूरज काफी ऊपर चढ़ गया था। उसने तेज-तेज कदम उठाए। लगभग महीने भर बाद गाँव लौटा था। जानी-पहचानी चिरपरिचित गलियों में उसे अपने बचपन से अब तक बिताए पल गुदगुदाने लगे। इससे पहले उसने कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। एक अनजाने से आत्मीय सुख से वह भर गया था। अपना गाँव, अपने रास्ते, अपने लोग। उसने मन-ही-मन मुसकुराकर कीचड़ भरी नाली को लाँघा और बस्ती की ओर मुड़ गया। गाँव और बस्ती के बीच एक बड़ा-सा जोहड़ था। जिसमें जलकुंभी फैले हुए थे।

जलकुंभी का नीला फूल उसे बहुत अच्छा लगता है। इक्का-दुक्का फूल दिखाई पड़ने लगे थे। उसने जोहड़ के किनारे-किनारे चलना शुरू कर दिया। पिता जी आँगन में पड़ी एक पुरानी चारपाई की रस्सी कस रहे थे। सुदीप को आया देखकर वे उसकी ओर लपके।

शेष पृष्ठ 5 पर

मलेरिया, पीलिया, चिकिन गुनिया व डेंगू से सावधान

डा0 वन्दना, बैगलुरु

मलेरिया–

लक्षण– तेज कंपकंपी छूटने के साथ तेज सिरदर्द और तेज बुखार कंपकंपी बहुत तेज होती है। इसके अंतराल से बुखार आता है।

कारण– एनाफिलिज नामक मच्छर इस बीमारी के होने का करण है। काटने के 14 दिन के बाद तेख बुखार हो जाता है। ये मच्छर बरसात के इकट्ठे पानी में पनपते हैं

बचाव– मच्छर से बचाव के साधन अपनाने चाहिए। मच्छर दानी, मशीन, क्रीम का उपयोग करना चाहिए। आस–पास पानी को इक्ट्ठा नहीं होने देना चाहिए। यदि हो और जिसे साफ न किया जा सके तो किटनाशक या मिट्टी का तेल उस पर डाल देना चाहिए।

उपचार– फूली हुई फिटकरी के चूर्ण में चार गुना पीसी हुई खांड या चीनी अच्छी तरह मिला लें, दो ग्राम की मात्रा गुनगुने पानी से दो–दो घंटे बाद तीन बार लें। यह दवा कुनैन से भी अधिक लाभदायक हैं और किसी प्रकार गर्मी खुश्की नहीं करती।

सावधानी – गर्भवती महिला को यह औषधि कदापि न दें।

विकल्प– तुलसी के सात पत्तियाँ और काली मिर्च के सात दाने एक साथ मिलाकर चबाने से पांच बार में मलेरिया जड़ से चला जाता है। दिन में तीन बार लें।

विषेश– तुलसी की चार पत्तियाँ और चार काली मिर्च रोज खाने में मौसमी बुखार भी दूर होता है।

खास दवा–भुना नमक–सादा खाने का नमक पिसा हुआ लेकर तवे पर (धीमी आंच पर) इतना सेंके कि उसका रंग काला भूरा (कॉफी के समान) हो जाए। ठण्डा होने पर शीशी में भर लें, दवा तैयार करने से पहले, एक चम्मच नमक, एक गिलास गर्म पानी में मिलाकर लें तथा ज्वर उतर जाने पर भी ऐसे ही लेना जरूरी है इस दवा का वास्तविक लाभ भूखे पेट सेवन करने से ही होता है। इसलिए सेवन हमेशा खाली पेठ ही करना चाहिए।

पीलिया–

लक्षण– यदि हल्का बुखार आता हो, भूख नही लगती हो, खाना देखने या मुह में रखने से उबकाई आती हो या उल्टी आ जाती हो, पेशाब गहरे पीले रंग का आ रहा हो। थकान, नींद आ रही हो, आँखें और नाखून पिले दिखते हों, तो ये सब पीलिया के लक्षण हैं। बरसात के मौसम में पीलिया होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

कारण– मल–मूत्र के विस्तारण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने कारण, बरसात में पीने का पानी बिना उबाले या बिना फिल्टर किए उपयोग करने पर ये हो सकता है। सिर्फ क्लोरीन से पानी को उपचारित करने से इस रोग के कीटाणु नष्ट नहीं होते हैं दूषित खाद्य सामाग्री को सेवन करने के कारण, रक्त चढ़ाये जाने के कारण, इन सब कारणों से कीटाणु शरीर मे प्रवेश कर लीवर पर हमला कर देते है। लीवर के रोगग्रस्त होने के कारण रक्त में बिलीरूबिन की मात्रा बढ़ जाती है इससे शरीर के अंग पीले दिखाई देते हैं।

उपचार – पीपल वृक्ष के तीन–चार नए पत्ते (कोपले) पानी से साफ करके, मिश्री या चीनी के साथ खरल में खूब घोटें या सिल पर बारीक पीस लें एक गिलास पानी में घोलकर किसी स्वच्छ कपड़े से छान लें।

यह पीपल के पत्तों का शर्बत रोगी को दिन में दो बार पिलाएं। आवश्यकतानुसार तीन दिन से सात दिन तक दें। पीलीया खत्म हो जाएगा। मूली के पत्तों और टहनियों का रस 40 ग्राम में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रात: खाली पेट पीने से सब प्रकार के पीलिया में लाभ होता है और इससे एक सप्ताह में पीलिया रोग दूर होता है। लिव–52 की टेबलेट्स 2 गोली दिन में तीन बार लेने से पीलिया में लाभ मिलता है।

संतरे निराहार मुख दो संतरे रोज खाने या संतरे का रस पीने से 5–7 दिन मे रोग खत्म हो जाता है। पोदीने का रस निकालकर सुबह चीनी मिलाकर पीना पीलिया में गुणकारी है, दस दिन लें।

विशेष – पीलिया में हल्का, उबला हुआ सुपाच्य भोजन एक बार में थोड़ी मात्रा में ले। पूर्ण विश्राम करें। स्वच्छ, शीतल हवादार कमरे में रहें।

मूली और उसके पत्तों की उबाल कर सब्जी बना कर उसका सेवन करें। पूरे दिन में 7–8 बार ग्लूकोज एक ग्लास साफ पानी में मिलाकर कर लें। पानी को अच्छे से उबाल कर ठंडा करके साफ बरतन में रखें। ज्वर सही हो जाने पर भी पीलिया में 3–4 महीने तक खान–पान का परहेज करना अतिआवश्यक है। अत: परहेज में ज्यादा तड़के वाला, तला–भुना खाना न लें। सादा उबला खाना ही लें। पानी उबला ही पिए, बाहर का खान–पान कुछ न लें। लिव– 52 टेबलेट्स या सिरप लेते रहें और ग्लूकोज भी लेते रहें।

चिकिन गुनिया–

लक्षण– 102.2 फा0 तक का ज्वर होता है।

धड और फिर हाथों एवं पैरों पे चकते बन जाना। शरीर के विभिन्न जोड़ों में पीड़ा होना शामिल है। सिर दर्द, प्रकाश से भय लगना, आँखों में पीड़ा भी होती है। ज्वर आम तौर पर दो से ज्यादा दिन नहीं चलता तथा अचानक समाप्त होता है, लेकिन अन्य लक्षण जिसमें अनिद्रा तथा निर्बलता भी शामिल है। रोगियों को लम्ब समय तक जोड़ो की पीड़ा हो सकती हैं जो उनकी उम्र पर निर्भर करती है।

कारण – यह रोग मानव–मच्छर–मानव के चक्र में फैलता है। जब चिकिनगुनिया से ग्रसित किसी आदमी को कोई मच्छर काटता है और फिर वही मच्छर किसी स्वस्थ आदमी काट होता है तो उस व्यक्ति को भी बीमारी हो जाती है। कुछ प्रजातियों की मादा मच्छर इस बिमारी को फैलाती हैं, ये दिन में काटते है।

सावधानी– चिकनगुनिया, व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को केवल मच्छरों के काटने से फैल सकता है। इसलिए जहाँ तक हो सके मच्छरों के काटने से बचे। घर में या आस–पास पानी इक्कठा न होने दे। मच्छरदानी का प्रयोग करें, दिन के समय भी ध्यान रखें, इसका मच्छर दिन में ही काटता है। मछर भगाने वाली मशीन का इस्तमाल करे। ऐसे कपड़े पहने जो शरीर का अधिक से अधिक भाग ढक सकें।

उपचार– तुलसी का प्रयोग इस बीमारी के लिए अमृत के समान है, नीम, गिलोय, सोंठ, छोटी पीपर और गुड़ व तुलसी का काढा बनाकर पीने से इसका इलाज संभव है।

डेंगू–

लक्षण व कारण– डेगू एडीज इजिप्टी मच्छरों के काटने से होता है, यह रोग अचानक तीव्र ज्वर के साथ शुरू होता है, जिसके साथ–साथ तेज सिर दर्द होता है। मांसपेशियों तथा जोड़ों में भयानक दर्द होता है जिसके चलत ही इसे हड्डी तोड़ बुखार कहते हैं। इसके अलावा शरीर पर लाल चकते भी बन जाते है। जो सबसे पहले पैरों पे फिर छाती पर तथा कभी–कभी सारे शरीर पर फैल जाते हैं। पेट खराब होना, पेट में दर्द, कमजोरी, दस्त, चक्कर आना, भूख न लगना भी लक्षण हैं। जब तक रोगी का तापक्रम सामान्य नहीं होता है तब तक उसके रक्त में प्लेटलेटस की संख्या कम रहती है।

उपचार – डेगू के दौरान आपको सही से आराम करने और बहुत सारे पेय पदार्थ पीने की सलाह दी जाती है। गिलोय के तनों को उबालकर काढ़ा बनाकर उसका सेवन करना चाहिए, इसके साथ तुलसी के पत्तो और अदरक, भी डाला जा सकता है,

मेथी के पत्ते बुखार कम करने और रोगी का दर्द कम करने में सहायक होते है। मेथी पाउडर को भी पानी मे मिला कर पी सकते है। पपीते के पत्ते प्लेटलेट्स की गिनती बढ़ाने मे मदद करते हैं। साथ ही दर्द, उबकाई, थकान आदि को भी कम करते है। पत्तों को कूट कर खा सकते है या फिर इन्हें ड्रिंक की तरह भी पिया जा सकता है।

टाइफाइड–

लक्षण– नियमित बढ़ने वाला तेज बुखार। बदन दर्द, कमजोरी, सिर व पेट दर्द। कम भूख लगना। बच्चों में दस्त की शिकायत। बडों में कब्ज की शिकायत। बीमारी अधिक बढ़ जाने पर आतों में अल्सर हो सकता है।

कारण– यह बुखार Salmonella Typhi नाम, के बैक्टीरिया के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। इस बुखार का फैलाव संक्रमित पानी और खाद्य पदार्थ से होता है। टाइफाइड बुखार दूषित पानी से नहाने से और खाद पदार्थ धोकर न खाने से फैलता है। इसका बैक्टीरिया कई हफ्तों जीवित रह सकता है, टाइफाइड बुखार से पीड़ित व्यक्ति के झूठे खाने पिने से भी यह हो सकता है।

उपचार – किसी कपड़े को एक भाग सिरका (सेव का) और दो भाग पानी लेकर उसमें भिगोऐं। अतिरिक्त पानी को निचोड़ दें और इस पट्टी को माथे और पेट पर रखें। एक पट्टी पैर के तलवों पर भी रखी जा सकती है। लहसुन की कली को पीसकर गरम पानी में मिलाऐं, 10 मिनट ढक कर रखें। पानी को छान लें और घूंट–घूंट करके धीरे धीरे पीएं। एक दिन में इस पेय को दो बार पीए।

लौंग के तेल में Antibacterial गुण होते हैं जो कि बैक्टीरिया को मार देते हैं। पानी को लौंग डालकर उबाल ले। जब पानी आधा रह जाए तो इस छान लें, इस पानी को पूरा दिन पीए, इस उपचार को पूरे हफ्ते लगातार करें। दालचीनी का चूर्ण एक चुटकी (आधा से एक ग्राम) दो चम्मच शहद में मिलाकर दिन में दो बार चाटने से टाइफाइड रोग से बचा जा सकता हैं।

चन्द बातों का ध्यान रखकर आप निरोगी रहकर जीवन का भरपूर आनन्द ले सकते हैं।

अपने घर और आस–पास सफाई रखें, कहीं भी पानी इक्ठ्ठा न होने दें। मच्छरों से बचाव के लिए मच्छर दानी, मशीनों और ओडोमास, क्रीम आदि का प्रयोग करें। दिन में भी मच्छरों से अपना बचाव करें। ठंड व भीगने से बचें, कपड़े गीले हो जाने की अवस्था में तुरंत कपड़े बदल लें। साफ पानी से नहाए और अन्य दैनिक कार्य पूर्ण करें। उबाल कर व छानकर पानी का प्रयोग करें। खान–पान सादा चीजो का रखें। बाहर के खाने–पीने की चीजो का प्रयोग न करें। खाने को साफ बर्तनों में ढक कर रखें। शौचालयों का प्रयोग करें तथा शौच के बाद हाथों को अच्छे से धोऐं। खाने से पहले अच्छे से हाथों को अवश्य धोऐं। मन प्रसन्न रखें और और आने वाले ठंडक के मौसम का लुफ्त उठाएं।

उत्तराखंड में बंजर होती खेती और पलायन

भगवती तिवारी, मानिला

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में बंजर होती खेती और पलायन एक गंभीर समस्या है। पिछले तीन दशकों के दौरान जोत भूमि का रकबा लगातार घटता जा रहा है। जिस गति से जोत भूमि घट रही है उसी गति से पर्वतीय क्षेत्रों से ग्रामीणों का पलायन भी जारी है। पलायन की गंभीर होती समस्या निकट भविष्य में पहाड़ के वजूद को समाप्त कर सकती है। 1990 के दशक तक पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि और पशुधन का व्यवसाय प्रमुख था। इस दौरान लोगों का शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ रोजगार की बेहतरी को लेकर धीरे धीरे पलायन शुरू हुआ। उस समय तक उत्तराखंड राज्य तत्कालीन उत्तर प्रदेश का हिस्सा था।

1994 के दौरान उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन का मुख्य कारण पर्वतीय क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के साथ रोजगार, शिक्षा और पलायन को रोकने के लिए पर्वतीय राज्य बनाने का आंदोलन शुरू हुआ। यह माना जाता था कि पर्वतीय राज्य बनने के बाद पलायन को रोकने का कार्य और अन्य आधारभूत सुविधाओं का विकास होगा जिससे पर्वतीय राज्य की पुरातन संस्कृति और कृषि का बचाव भी किया जा सकेगा। परंतु पर्वतीय राज्य बनने के बाद यह समस्या कम होने की बजाय विकट स्थिति मैं पहुंच गई। पलायन को रोकने में अब तक की गठित राज्य सरकारें भी कोई कारगर कदम नहीं उठा सकी हैं।

अब तक कि राज्य सरकारों ने पलायन को रोकने और ढांचागत कृषि विकास की योजनाओं के नाम पर मात्र कागजी कार्रवाई की खानापूर्ति की है जिस कारण ग्रामीण आजीविका के साधन समाप्त हो रहे हैं। जंगली जानवरों द्वारा कृषि उपज को नष्ट करना, अनिश्चित वर्षा और सरकारी क्रय केंद्रों के अभाव में पर्वतीय क्षेत्रों के कृषकों का कृषि से मोह भंग हो रहा है। वही पर्वतीय क्षेत्रों की कृषि मैं अमूल्य योगदान निभाने वाले गोवंश का तिरस्कार भी कृषि भूमि को बंजर बनाने का प्रमुख कारण है।

पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण भावी पीढ़ी को बेहतर शिक्षा देने के लिए पलायन हो रहा है जिस कारण नई पीढ़ी के लोग ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन कर तराई के क्षेत्रों में जा रहे हैं। विकासखंड सल्ट में आज कई गांव सुने हो गए हैं। अधिकांश मकान खंडहर हो चुके हैं। गांव घरों में वृद्ध और महिलाएं रह चुकी हैं। नई पीढ़ी के लोग रोजगार के लिए शहरी क्षेत्रों में चले गए है। यदि पलायन इसी तरह होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब समूचा पहाड़ वीरान हो जाएगा। वर्तमान सरकारों को इस पर धरातलीय कार्य करने की आवश्यकता है।

नई पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक कृषि और रोजगार से जोड़ना होगा वही ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी के साथ उच्च स्वास्थ्य सेवाओं को भी मजबूत करना होगा तभी पर्वतीय क्षेत्रों का वजूद रह पाएगा।

पृष्ठ 4 से आगे

पच्चीस चौका डेढ़–सौ

''अचानक ... क्या बात है ... लगता है सहर में जी नी लग्या।''

''नहीं, ऐसी बात नहीं है ... बस ऐसे चला आया।'' सुदीप ने सहजता से कहा।

जेब से निकालकर तनख्वाह के रुपए उनके हाथ में रखकर, पाँव छुए। पिता जी गद्गद हो गए। दोनों हाथों में रुपए थामकर माथे से लगाया जैसे देवता का प्रसाद ग्रहण कर रहे हों। मन–ही–मन अस्फुट शब्दों में कुछ बुदबुदाए। फिर सुदीप की माँ को पुकारा, '' दीपे की माँ, करके यहाँ तो आ... ले सिंभाल अपने लाड़ले की कमाई।''

माँ आवाज सुनकर बाहर आई। आँचल पसारकर रुपए लिये और सुदीप को छाती से लगा लिया। उस क्षण ऐसा लग रहा था जैसे समूचा घर खुशी की बारिश में भीग रहा है सुदीप चुपचाप सभी के खिले चेहरे देख रहा था, सब खुश ऊपरी तौर पर तो वह भी मुसकुरा रहा था, लेकिन उसके भीतर एक खलबली मची थीं। वह अशांत था। उसने माँ से कहा, ''यहाँ बैट्ठो माँ ...'' हाथ बढ़ाकर आँचल से कुछ रुपए ले लिये, गंभीर स्वर में बोला, ''पिता जी, मुझे आपसे एक बात कहनी है।''

''क्या बात है बेट्टे ?... कुछ चाहिए?'' पिता जी ने जिज्ञासावश पूछा।

''नहीं पिताजी कुछ नहीं चाहिए ... मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ।''

पिता जी गुमसुम होकर उसकी ओर देखने लगे। कुछ देर पहले की खुशी पर धुंध फैलने लगी थी। तरह–तरह की आशंकाएँ उन्हें झकझोरने लगी थीं। वे अचानक बेचौनी महसूस करने लगे थे ।

सुदीप ने पच्चीस–पच्चीस रुपए की चार ढेरियाँ लगाईं। पिता जी से कहा, ''अब आप इन्हें गिनिए।''

''पिता जी चुपचाप सुदीप की ओर देख रहे थे, उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। असहाय होकर बोले, ''बेट्टे , मुझे तो बीस ते आग्गे गिनना बी नी आत्ता, तू ही गिणके बता दे। सुदीप ने धीमे स्वर में कहा, ''पिता जी, ये चार जगह पच्चीस–पच्चीस रुपए हैं। अब इन्हें मिलाकर गिनते है ... चार जगह का मतलब है पच्चीस चौका...'' कुछ क्षण रुककर सुदीप ने पिताजी की ओर देखा। फिर बोले, ''अब, अब देखते हैं पच्चीस चौका सौ होते हैं या डेढ़–सौ।''

पिता जी अवाक् होकर सुदीप का चेहरा देखने लगा। उनकी आँखों के आगे चौधरी का चेहरा घूम गया। तीस–पैंतीस साल पुरानी घटना साकार हो उठी। वह घटना जिसे वे अब तक न जाने कितनी बार दोहराकर लोगों को सुना चुके थे। आज उसी घटना को नए रूप में लेकर बैठ गया था सुदीप।

सुदीप रुपए गिन रहा था बोल–बोलकर। सौ पर जाकर रुक गया। बोला, ''देखो, पच्चीस चौका सौ हुए ...डेढ़ सौ नहीं।'' पिता जी ने उसके हाथ से रुपए ऐसे छीने जैसे सुदीप उन्हें मूर्ख बना रहा है। वे रुपए गिनने का प्रयास करने लगे। लेकिन बीस पर जाकर अटक गए। सुदीप ने उनकी मदद की। सौ होने पर पिता जी की ओर देखा। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था। उन्होंने फिर एक से गिनना शुरू कर दिया। बीस पर अटक गए। उलट–पलटकर रुपयों को देख रहे थे, जैसे कुछ उनमें कम हैं। सुदीप ने फिर गिनकर दिखाए। पिता जी को यकीन ही नहीं आ रहा था। सुदीप ने हर बार उनकी शंका का समाधान किया, हर प्रकार से। आखिर पिता जी को विश्वास हो गया। सुदीप ठीक कह रहा है। पच्चीस चौका सौ होते हैं। झूठ–सच सामने था।

पिता जी के हृदय में जैसे अतीत जलने लगा था। उनका विश्वास जिसे पिछले तीस–पैंतीस सालों से वे अपने सीने में लगाए चौधरी के गुणगान करते नहीं अघाते थे, आज अचानक काँच की तरह चटककर उनके रोम–रोम में समा गया था। उनकी आँखों में एक अजीब–सी वितृष्णा पनप रही थी। जिसे पराजय नहीं कहा जा सकता था। बल्कि विश्वास में छले जाने की गहन पीड़ा ही कहा जाएगा।

उन्होंने अपनी मैली चीकट धोती के कोने से आँख की कोर में जमा कीचड़ पोंछा और एक लंबी साँस ली। रुपए सुदीप को लौटा दिए। उनके चेहरे पर पीड़ा का खंडहर उग आया था। जिसको दीवारों से ईंट, पत्थर और सीमेंट भुरभुराकर गिरने लगे थे। उनके अंतस् में एक टीस उठी, जैसे कह रहे हों, 'कीड़े पड़ेंगे चौधरी ... कोई पानी देने वाला भी नहीं बचेगा ।'

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है। - सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर
आसना

श्रमजन स्वराज अभियान के अर्न्तगत नैनीडांडा क्लस्टर की सभी बैठकें आयोजित की गई। जिसमें सदस्याओं ने अपने गाँव से जुड़ी समस्याओं पर चिंता जाहिर की। सदस्याओं ने बताया की हमारे वहां प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र की असुविधा है। हमें रामनगर ही जाना होता हैं, यहां पर खाली झोला छाप डाक्टर बैठते हैं जो सिर्फ बुखार, सर्दी की दवाई देते हैं। बैठकों में सदस्याओं ने समाज में हो रहे जातिगत भेद भाव को लेकर चर्चा की। जैसे सल्ट में दलित युवक जगदीश को जान से मार दिया गया क्योंकि उसने दूसरी जाति लड़की से शादी की। आखिर कब तक हम इन कुरीतियों में जीते रहेंगें, इस पर महिलाओं ने चर्चा की। साथ ही महिला महोत्सव की तैयारी को लेकर बात हुई। जिसमें यह तय हुआ की 9 अक्टूबर के दिन रचनात्मक महिला मंच नैनीडांडा की बैठक होगी। जिसमें महोत्सव को लेकर कुछ विषयों पर चर्चा की जाएगी। प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के अर्न्तगत सदस्याओं को सब्जियों के बीज लगाने के लिए प्रेरित किया गया और सदस्याओं को बीज भी दिये गये जिसमें गोल मूली, धनिया, पालक, मटर, मैथी का बीज शामिल था। श्रम उत्पाद के अर्न्तगत महिलाओं को हल्दी का भुगतान किया गया।

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर
राकेश, दाड़िमी

सर्व प्रथम 1 तारीख को दाड़मी में बैठक की गयी, जिसमें इस बार नुक्कड़ टीम के सदस्य भी उपस्थित थे तो बैठक एक अलग ही अंदाज में की गयी। बैठक में इस बार श्रमयोग के बारे में भी चर्चा हुई। महिलाएं आय अर्जक गतिविधियों को जानना चाहती थीं, तो उन्हें विस्तार पूर्वक बताया गया। साथ-साथ प्रारंभिका पर चर्चा करते हुए सामाजिक पूंजी बढाओं अभियान पर भी बात की गयी। 3 तारीख को रामपूर में बैठक आयोजित की गयी जिसमें बैठकों की गुणवत्ता पर चर्चा करते हुए बचत राषि एंव ऋण पर बात की गयी। साथ-साथ धारों व नौलों की स्थिति पर चर्चा की गयी। 5 को नैकड़ा में बैठक आयोजित की गयी जिसमें श्रम उत्पाद एंव श्रम बाजार पर विस्तार से चर्चा की गयी। श्रम बाजार की शुरूआत से लेकर अब तक की यात्रा को साझा किया गया। साथ-साथ खादय पदार्थों में होने वाली मिलावटों पर बात की गयी। 6 को इजराल चांच एंव 8 को मंशुबाखली तथा छिड़गा में बैठक आयोजित की गयी जिसमें समाज में फैली जाति की घृणा पर चर्चा की गयी जिसके कारण दलित जगदीश को जान से मार दिया गया। 11 को कुक्लयाल बाखली एंव 12 को मल्ला बिरलगांव में बैठक की गयी। 13 को पीपना में जन शक्ति एंव नारी शक्ति स्वयं सहायता समूह की बैठक एक साथ की गयी जिसमें महिलाओं की एकता पर बात की गयी। दोनों समूह आमतौर पर अलग-अलग बैठक आयोजित करते थे। अब इस माह से एक साथ बैठक की जाएगी। 14 को डौठापानी 15 को बिचला चांच 16 को सकनड़ा 19 को बिरलगांव में बैठक आयोजित की गयी जिसमें इस बार का मुख्य विषय बीज एंव बीज कोष था। 21 को कफल्टा एंव 22 को कालीगाड़ में बैठक आयोजित की गयी। 23 को रचनात्मक महिला मंच की बैठक खुमाड़ शहीद स्मारक में की गयी जिसमें इस बार महिला महोत्सव को लेकर चर्चा की गयी और यह निर्णय लिया गया की इस बार का महोत्सव खुमाड़ इण्टर कॉलेज में किया जाएगा। 27 को कुणीधार में बैठक तथा रथखाल में देशी ब्रोकली, शिमला मिर्च, बैंगन, गाजर, भिंडी, पत्ता गोभी, फूल गोभी आदि के बीजों पर शोध एंव अनुसंधान का कार्य किया गया। इसके बाद 28 तारीख को शोध एंव अनुसंधान का कार्य दाड़मी में किया गया। इस माह सब्जी के बीजों को लगाने के तरीके पर चर्चा की गयी और महिलाओं को प्रशिक्षण भी दिया गया। बारिश होने के कारण मिर्च की फसल पर असर पड़ रहा है, बारिश को देखकर लग रहा है की इस बार असोज कार्य देरी से आरंभ होगा।

गिगंडे क्लस्टर
देवकी देवी, श्रमसखी

सितम्बर माह गिगड़े क्लस्टर के अलग-अलग गाँवों में समूह की मासिक बैठको का आयोजन किया गया। बैठको में नवें महिला महोत्सव को लेकर चर्चा की गई। जिसमें सदस्याओं को बताया गया कि इस वर्ष मंच अपना नवाँ महिला महोत्सव 26-27 नवम्बर को खुमाड में आयोजित करेगा और इस वर्ष का महिला महोत्सव दो दिन का होगा। जिसमें प्रथम दिन 26 नवम्बर को परिचर्चा सत्र होगा। अगले दिन 26 नवम्बर को हर वर्ष की तरह कार्यक्रम होगा। सदस्याओं में महोत्सव के स्थान व कार्यक्रम की रूपरेखा के लिए अपनी-अपनी सहमती दी। सदस्याओं को श्रम उत्पाद (हल्दी) का भुगतान किया गया। आगामी श्रम उत्पाद एकत्रीकारण व श्रम उत्पाद की गुणवत्ता पर चर्चा की गई। सदस्याओं ने सीमित व बंजर होती खेती व बढ़ते जंगली जानवरों के आंतक पर भी गहरी चिंता व्यक्त की। अगस्त माह में सदस्याओं ने अपने किचन गार्डन की मजबूती के लिए हरी पत्ते दार सब्जियों के बीज की मांग की थी, इस माह सभी सदस्याओं को पालक, धनिया, मूली, मैथी व मटर का बीज दिया गया व बीज कोष के 20 रू भी जमा किये गये। 23 सितम्बर को रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक खुमाड़ शहीद स्मारक में सम्पन्न की गई। मासिक बैठको में मंच की सभी सदस्याओं के साथ आगामी महिला महोत्सव के आयोजन के बारे में चर्चा, श्रम उत्पाद के एकत्रीकरण, ब्लॉक में दिये गये ज्ञापन पर चर्चा की गई।

जमरिया व थला क्लस्टर
सुरेन्द्र, श्रमयोग

यह माह विषेष रहा क्योंकि अगला माह (असोज) कामों से भरा हुआ रहने वाला है। इस माह समूहों में सामाजिक पूंजी बढ़ाओं अभियान के तहत महिला महोत्सव कि तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। रचनात्मक महिला मंच कि त्रैमासिक बैठक आयोजन होने वाला है इस बात की जानकरी देनी थी। रचनात्मक महिला मंच ने ब्लॉक में ज्ञापन सौपा इस पर समूहो को जानकारी दी गई। इन सब कार्यो के साथ साथ रचनात्मक महिला मंच ने प्राकृतिक धरोहर बचाओं अभियान तहत सब्जियों के बीजो का वितरण किया गया तथा 20 रूपये लिए गये जिससे बीज कोष को सुचारू चलाया जा सके। असोज का माह समाप्त होते ही महिला महोत्सव है। महिलाऐं असोज के साथ-साथ महोत्सव कि तैयारियों में भी लगी हुई है तथा महोत्सव को लेकर उत्साहित है।

जसपुर क्लस्टर
आसना, श्रमयोग

श्रमजन स्वराज अभियान के अन्तर्गत जसपुर क्लस्टर के सभी समूह की बैठक की गई। बैठक में सदस्याओं को त्रैमासिक बैठक के बारे में बताया गया। हर तीन माह के बाद रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक आयोजित की जाती है। इस बार सल्ट के शहीद स्मारक खुमाड में त्रैमसिक बैठक का आयोजन किया गया। जिस में आगमी महिला महोत्सव की व्यवस्था को लेकर चर्चा हुई। श्रम उत्पाद एकत्रिकरण व भुगतान को लेकर चर्चा हुई। मासिक बैठको में महिलाओं के स्वास्थ से जुडे मुददों पर बात की गईं और समाज में बड रहे जातिगत भेद भाव पर बात हुई। सदस्याओं ने बैठक में सरकार को लेकर अपना गुस्सा जाहिर किया। उनका कहना था कि हमारे लिए वह कुछ नहीं कर रही है। महंगाई बड़ रही हैं। जानवरों का आतंक बढ़ता ही जा रहा है। जिस कारण से लोग खेती छोड रहे हैं। सामुदायिक खेती के विचार को देखे, इस बारे में सदस्याओं को सुझाव दिये गये। प्राकृतिक धरोहर बचाओं अभियान के तहत बीजों का वितरण किया गया। जिसमें मूली, मटर, मैथी, पालक के बीज शमिल थे। सदस्याओं ने कहा कि इस बीज से हम बहुत सब्जियाँ खा लेते हैं। कोट जसपुर की महिलाओं ने पिछली बार के मिले बैगन के बीज से कुछ सब्जी बाजार में भी बेची। सदस्यायें अपनी क्यारी को जिन्दा रख रही है; और कुछ न कुछ उसमें बो रही हैं, यह एक अच्छा संकेत है। श्रमयोग पत्र जो सामुदायिक पत्र है, में अब महिलाएँ लिख रही हैं और पढ़ भी रही हैं। साथ ही पत्र की सदस्यता ले रही हैं। सदस्यायें मजाक में बोलती हैं कि ये तो हमारा स्कूल खुल गया।

घचकोट क्लस्टर
विजय, श्रमयोग

घचकोट कलस्टर की मासिक बैठको में इस बार रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक जो कि शहीद स्मारक खुमाड़ मे होनी तय थी के बारे में सभी समूहों में साझा किया गया, जिस बैठक में प्रत्येक समूहों से तीन पदाधिकारियों का होना अतिआवश्यक था। क्योंकि, इस बैठक में, आगामी महिला महोत्सव पर चर्चा होती थी। घचकोट कलस्टर के सभी समूहों के सदस्यों पर यह जिम्मेदारी थी की वे इस त्रैमासिक बैठक में प्रतिभाग करें। इस बार का महिला महोत्सव रा0इ0कालेज खुमाड़ में होने वाला है और जिस कलस्टर में महोत्सव होता है उस कलस्टर की प्राथमिक जिम्मेदारी होती है, अत: घचकोट कलस्टर के सभी समूह उत्साहित हैं कि इस बार महिला महोत्सव उनके कलस्टर मे हो रहा है। इसके साथ-साथ इस बार समूहों में सब्जियों का बीज भी रचनात्मक महिला मंच की ओर वितरित किया गया। क्षेत्रीय जन समस्याओं पर अपनी आवाज बुलन्द करने वाले स्वयं सहायता समूह अब धीरे-धीरे अपनी पहचान बना रह है। जिसका उदाहरण विगत माह में दिये गये ज्ञापनों पर कार्यवाही होने पर दिखता है। क्योकि बिजली विभाग, गैस सिलेण्डर, ब्लाक से सम्बन्धित योजनाएं धीरे-धीरे स्वयं सहायता समूहों की ओर से किये गये प्रयासों से अब उन्हें लाभावित्त कर रही हैं। समूहों की बैठकों में कहा गया कि मंच इस वर्ष भी क्षेत्रीय उत्पाद जैसे हल्दी, जखिया, अजवाईन, गहत, मडुवा उत्पादों की अन्य सालों कि तरह खरीद करेगा।

भ्याड़ी क्लस्टर
पंकज, श्रमयोग

इस महीने भ्याड़ी कलस्टर की मीटिंग में महिलाओं के बात करने के लिए उनके अपने मुद्दे थे। जिनमें एक बहुत जरूरी मुद्दा था थला-मुनड़ा रोड। इस सड़क को लेकर हालाकि कई ज्ञापन पहले सम्बन्धित विभाग को व तहसील कार्यालय में दिए गए थे, लेकिन हमेशा आश्वासन के सिवा कुछ नही मिला। इसी संदर्भ में भ्याड़ी थला मुनड़ा की महिलाओं तथा पुरूषों द्वारा 2 सिंतबर को मरचूला मौलेखाल सड़क को 3 घंटे जाम रखा गया और अपनी बातें प्रशासन के सामने रखी गई। इस माह औंलेत गांव मे बने नए समूह मे चुनाव किया गया तथा तल्ली भ्याडी मे स्थित नए समूह का बैंक खाता भी खोला गया। सभी समूहों में बीज बांटा गया और त्रैमासिक बैठक हेतू खुमाड़ के लिए निमंत्रण दिया गया। महिला महोत्सव की तैयारी पर बात की गई। कुछ इस प्रकार सिंतबर माह की बैठकें पूरी हूई।

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 सितम्बर	25	28	18	29	26	27.5	20	30
2 सितम्बर	25	27.5	17	29	26	27	20	29.9
3 सितम्बर	25	27	16	28.5	26	28	21	30
4 सितम्बर	25	26.5	19	29	26	27	20	30
5 सितम्बर	25	27	18	29	26	28	19	30
6 सितम्बर	25	27.5	17	28	26	28	20	30
7 सितम्बर	25	26.5	15	29	26	27	20	30.5
8 सितम्बर	25	26	18	29	26	27.5	21	30.4
9 सितम्बर	25	27	17	29	26	28	20	30.1
10 सितम्बर	25	27.5	16	28.9	26	28	21	29.9
11 सितम्बर	25	28	19	29	26	27	20	30
12 सितम्बर	25	27.5	18	29	26	28	19	30
13 सितम्बर	25	28	19	28.5	26	29	20	30
14 सितम्बर	25	27	19	28	26	26.5	21	29
15 सितम्बर	25	26	15	28	26	27	16	28
16 सितम्बर	25	25.5	19	27	26	26	19	27
17 सितम्बर	25	25	19	27	26	26	15	26
18 सितम्बर	24	26.5	18	26	25	27	20	27
19 सितम्बर	24	26	21	26	25	27	19	27
20 सितम्बर	24	27	18	26.5	25	26	20	28
21 सितम्बर	24	27	19	27.5	25	28	20	28
22 सितम्बर	24	27	17	27.5	25	26	21	28.5
23 सितम्बर	24	26.5	18	27.5	25	26	19	28.5
24 सितम्बर	24	25	15	27.5	25	25.5	20	27
25 सितम्बर	24	24.5	18	26	25	25	19	27
26 सितम्बर	24	26	20	26	25	27	22	27
27 सितम्बर	24	27	16	26	25	27.5	19	27
28 सितम्बर	24	27.5	16	26	25	28	19	27.5
29 सितम्बर	24	27	19	26	25	26.5	20	27
30 सितम्बर	24	27.5	19	...	25	26	20	.....

वर्षा (मीमी)

दिनाँक	गिंगड़े (सल्ट)	औंलेथ (नैनीडांडा)	चांच (सल्ट)	बल्यूली (सल्ट)
2 सितम्बर	-	-	-	10
3 सितम्बर	16	-	-	5
4 सितम्बर	-	19	-	-
5 सितम्बर	4	-	-	-
8 सितम्बर	-	20	-	-
10 सितम्बर	-	-	-	2
13 सितम्बर	-	-	6.2	7
14 सितम्बर	17	-	8.3	16
15 सितम्बर	-	13	6.5	38
16 सितम्बर	19	-	22	10
17 सितम्बर	-	-	35	38
19 सितम्बर	-	-	5.2	9
20 सितम्बर	10	-	-	6
21 सितम्बर	-	31	-	6
22 सितम्बर	20	-	-	-
23 सितम्बर	-	12	36.5	-
24 सितम्बर	35	32	-	30
25 सितम्बर	-	43	-	-

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

25 सितम्बर, 2022

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौंठा पानी नौला	6.5	6.5	6.5	23	23	23
धारा पानी	7.1	7.1	7.1	37	37	37
शिव मन्दिर नौला	7.2	7.2	7.2	39	39	39
हैंड पंप नौला	7.7	7.7	7.7	36	36	36

उत्तराखण्ड शासन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सरलीकरण, समाधान निस्तारीकरण और संतुष्टि

विकल्प रहित संकल्प

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

एक ही लक्ष्य-एक ही सपना, सर्वश्रेष्ठ बने उत्तराखण्ड अपना

- समान नागरिक संहिता पर बढ़े कदम, विशेषज्ञ समिति ने की कई बैठकें, आम जन से सुझाव आमंत्रित।
- प्रदेशवासियों की अपेक्षानुसार भू कानून बनाने की ओर अग्रसर, समिति ने दी रिपोर्ट, भूमि के दुरूपयोग को रोकने पर विशेष ध्यान।
- भर्ती में धांधली करने वालों पर शिकंजा कसा। भर्ती प्रक्रिया को पूर्ण पारदर्शिता से कराने की कार्य योजना तैयार, जल्द रिक्त पदों पर भर्ती शुरू की जा रही है।
- सरलीकरण, समाधान, निस्तारीकरण और संतुष्टि पर विशेष ध्यान। जनता से जुड़ी प्रक्रियाओं को सरलतम किया जा रहा है।
- वर्ष 2025 तक उत्तराखण्ड को प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिए सभी विभागों द्वारा कार्ययोजना तैयार की जा रही है।
- सुशासन के लिए अपणि सरकार पोर्टल, ई-ऑफिस, सीएम हेल्पलाइन 1905 के साथ ही भ्रष्टाचार की शिकायत के लिए 1064 शुरू।
- केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री के साथ ही टनकपुर-पिथौरागढ़ की सड़क कनेक्टीवीटी में सुधार के लिए चारधाम ऑल वेदर रोड़ परियोजना पर तेजी से काम चल रहा है।
- ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल परियोजना पर तेजी से कार्य चल रहा है। टनकपुर बागेश्वर और डोईवाला से गंगोत्री-यमुनोत्री रेल लाइन के सर्वे के साथ ही हरिद्वार-देहरादून रेल लाइन के दोहरीकरण पर भारत सरकार द्वारा सहमति।
- उत्तराखण्ड पहला राज्य जहां उड़ान योजना में हेली सर्विस प्रारंभ। एयर कनेक्टिविटी को मजबूती मिली।
- उत्तराखण्ड के दूरस्थ क्षेत्रों में संचार कनेक्टिविटी के लिए भारत सरकार द्वारा 1202 मोबाइल टावर की स्वीकृति।
- पर्वतीय क्षेत्रों में रोपवे नेटवर्क निर्माण के लिए पर्वतमाला परियोजना प्रारंभ।
- होम स्टे योजना से पर्यटन के विकास के साथ ही युवाओं को रोजगार मिल रहा है।
- प्रदेश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत बाल वाटिकाओं की शुरुआत।
- श्री केदारनाथ धाम के भव्य पुनर्निर्माण के साथ श्री बद्रीनाथ धाम के लिए भी मास्टर प्लान।
- कुमाऊं के पौराणिक मंदिरों के लिए मानसखण्ड मंदिर माला मिशन की रूपरेखा बनाई जा रही है।
- चार धाम यात्रा मार्ग में बेहतर अवस्थापना विकास और सरकार के कुशल यात्रा प्रबंधन से इस वर्ष 35 लाख से अधिक श्रद्धालु चार धाम के दर्शन कर चुके हैं। लगभग 3 करोड़ कावड़ यात्री कावड़ यात्रा पर आए।
- गरीब परिवार को साल में मिलेंगे तीन गैस सिलेंडर मुफ्त। बजट प्रावधान किया गया।
- ट्रैफिक की समस्या को दूर करने के लिए मल्टीस्टोरी पार्किंग, केविटी, टनल व सर्फेस पार्किंग के लिए काम शुरू।
- मुख्यमंत्री बालाश्रय योजना में आपदा, महामारी एवं दुर्घटना से अनाथ बच्चों की स्कूली शिक्षा की व्यवस्था।
- मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना प्रारंभ। प्रदेश के 3900 खिलाड़ियों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था।
- आंगनवाड़ी, आशा कार्यकत्रियों के मानदेय में वृद्धि। राज्य आंदोलनकारियों की पेंशन के साथ ही वीरता पदक प्राप्त सैनिकों की सम्मान राशि में बढ़ोतरी।
- निःशुल्क जांच योजना में 207 प्रकार की पैथोलॉजिकल जांचों की निःशुल्क व्यवस्था।
- आयुष्मान योजना में 48 लाख 42 हजार से अधिक कार्डधारक, 5 लाख 65 हजार से अधिक मरीजों का मुफ्त उपचार, 978 करोड़ रुपये से अधिक का व्यय किया गया।
- किसानों को तीन लाख और महिला स्वयं सहायता समूहों को पांच लाख रुपये तक का ब्याज रहित ऋण।
- 3900 जैविक क्लस्टरों पर काम शुरू, गौ सदनों की स्थापना के लिए बजट प्रावधान 6 गुना करते हुए 15 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई।
- फार्म मशीनरी बैंक में 80 फीसदी सब्सिडी की व्यवस्था।
- वोकल फॉर लोकल पर आधारित 'एक जनपद दो उत्पाद' योजना शुरू। स्थानीय उत्पादों की जिओ टैगिंग।
- ऊधमसिंह नगर में एम्स ऋषिकेश के सैटेलाइट सेंटर को मंजूरी।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-9

✍शंकर दत्त, श्रमयोग

खेती की क्राति ने भोजन खोजी मानव पर अलग तरह से प्रभाव डाला। वह अब धीरे-धीरे एक जगह पर रहने के लिए मजबूर था और खेती व्यवस्था का गुलाम। अब भोजन खोजी मानव सारी सुख सुविधायें अपने आस-पास देखने लगा और विकास के क्रम को अपने नजरिये से परिभाषित करने लगा। जिससे कि उसे एक जगह पर रहने मे सुविधा हो और वह समाज और संसाधन को अपने तरीकों से बदल सके।

जीव विज्ञान के तथ्यो से यह साफहै कि भोजन खोजी मानव एक क्रमिक विकास के तहत कुछ करोड़ वर्षो मे यहाँ तक पहुंचा। इस क्रम मे उसने विकास के प्राकृतिक नियमों को अपनाते हुने निश्चित अनुवाषिंक कोड पाया है, जो उसे वर्तमान पर्यावरण मे जीने के लिए सहयोग कर रहा है। किन्तु भोजन खोजी मानव ने जीव विज्ञान की वैज्ञानिक भाषा 'विकास क्रम' को बदल कर सृजन का नाम दे दिया जबकि सृजन क्रमिक नहीं है। यह जीव विज्ञान के नियमो को नहीं मानता। यह एक विशेष प्राजति के विशेष लक्षणो को परिभाषित करता है।

विकास का प्राकृतिक कथन मानता है, कि भोजन खोजी मानव भी एक तरह के नहीं है। इनमें अनुवांशिक एवं शारीरिक अन्तर है और यह अन्तर स्वाभाविक हैं। क्योकि भोजन खोजी मानव के विकास में पर्यावरण का सीधा प्रभाव है और यह प्रभाव अनुवांशिक कोडों को परिवर्तित कर भोजन खोजी मानव को हर परिस्थिति मे रहने को तैयार करती है। लेकिन सृजन की कथा अलग बात करती है। वह कहती है सब की एक समान आत्मा है सब एक जैसे हैं।

अमेरिका का स्वाधीनता घोषणा पत्र मनुष्यों के सृजन से विकास की पैरवी करता है। जबकि जीव विज्ञान के अनुसार लोगों का सृजन नहीं किया गया वे विकास की प्रक्रिया की उपज हैं। जिस तरह लोगों का कभी सृजन नहीं हुआ था, उसी तरह जीव विज्ञान के मुताबिक ऐसा कोई 'सृजनकर्ता' भी नहीं है। सृजनकर्ता के अवैज्ञानिक विचार ने मनुष्य को किस तरह मूढ़ बना दिया इसकी आगे चर्चा करगें।

किताब-'सेपियन्स' और 'आग से अन्तरिक्ष तक' पर आधारित

क्रमशः

अब बोलेगी कठपुतली

संचार अभियान के संचालक रामलाल किसी परिचय के मोहताज नहीं है। लोक माध्यमों के द्वारा समाज को जागरुक करने की उनकी लम्बी यात्रा रही है। आजकल अपनी कठपुतली को लेकर वो डिजिटल माध्यम से 'अब बोलेगी कठपुतली' कार्यक्रम कर रहे हैं। यू-ट्यूब में इस कार्यक्रम को अच्छी लोकप्रियता मिल रही है। यहाँ प्रस्तुत है धर्म व जाति को आधार बनाकर समाज में नफरत फैलाने का कुत्सित प्रयास करने वालों को आईना दिखाता, कठपुतली द्वारा अभिनित उनका नाटक-'खतरा'।

मै स्वार्थी बाजार हूँ। मैं बड़ा अंधकार हूँ। इस बड़े अंधकार में जीने का क्या अधिकार है? बोलो.....

न न न न न न ना।

मैं ऐसा अंधकार हूँ। हाँ.....। आप समझ रहे होगे मैं कौन हूँ.....तो आप की जानकारी के लिए बता देता हूँ..... मैं हूँ..... ''खतरा'' ऐसा खतरा जो लोगों को न दिखता हूँ..... ना समझ में आता हूँ।

मुझे इंसानों ने बनाया है..... इंसानों के लिए....।

भारती- आप कह रहे हो इन्सानों के लिए खतरा हो.... वो कैसे?

स्वार्थी बाजार- मैं लोगो के दिमाग में अटैक करता हूँ.....और उनकी आइडोलोजी और उनकी सोच को प्रभावित करता हूँ।

भारती- अच्छा... अरे.... हम भारत के लोग है। हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए मजबूत संविधान बनाया है। जिसमें हमारा अधिकार भी है। फिर आप कैसे उनके सोच को बदल दोगे?

स्वार्थी बाजार- मजबूत संविधान को इस्तेमाल करने के लिए अच्छी समझ और सही नियत की सरकार चाहिए।

भारती - हाँ तो है ना.... संविधान ने हमे वोट देने का अधिकार दिया है.... अच्छी सरकार चुन लेंगे।

स्वार्थी बाजार- वोट हा हा हा ..... अगर हिन्दुस्तान के वोटर अपना सही मतदान समझ लें... तो ये स्थिति नही आनी थी। मैं क्या करूगा पता है तुम्हें.....

भारती- क्या करोगे आप।

स्वार्थी बाजार- मैं उनमें लालच का बीज डाल दूँगा.... फिर वो लालच में आ जाएगें, फिर मेरा काम हो जाएगा।

भारती- मैं आपकी मनसा समझ रही हूँ..... मैं उनको बताऊँगी.... कि मीट, दारु पैसे के लालच में नहीं आना है।

स्वार्थी बाजार - अच्छा... वैसे तो ऐसा होना सम्भव नहीं है क्योंकि इतने सालों से इसी तरीके से वोटरों का इस्तेमाल किया गया है फिर भी अगर वो लालच से उपर उठ जाऐंगे तो पता है मैं क्या करुँगा।

भारती- क्या करोगे आप।

स्वार्थी बाजार- मैं उनमें जातिवाद का बीज डाल दूंगा। जिससे वो ऊँचा-नीचा, तेरा-मेरा करते रहेंगे, और बट जाऐंगे।

भारती- ऐसे कैसे बट जाएगें हमारे देश की सभ्यता और सिद्धान्त वसुदेव कुटुम्ब की है। मैं उनको बताऊँगी एक लकड़ी आसानी से टूट जाएगी, कई लकड़ियो का गट्ठा बना कर आपको तोड़ने को दिया जाए.... क्या आप उसे तोड पाएगें... नहीं! मैं ये समझा दूंगी उनको।

स्वार्थी बाजार- ये उदाहरण देते-देते तुम्हारे बाप-दादा मर गये, परन्तु अभी तक लोगो को समझ नहीं आया की एक साथ रहना है। तुम ज्यादा बोल रही हो आजकल.... तुम्हारी ज्यादा आवाज निकल रही है न.... मैं तुम्हें भी किसी न किसी ऐसी चीज में फंसा कर तुमें बदनाम कर दूँगा...हा हा हा..।

भारती- अरे.....एक तो आप का दिख ही रहा है। हमारा देश गंगा, जमुनी संस्कृति में पला-बढ़ा है.... वो आप का सामना कर लेगा।

स्वार्थी बाजार- सब आस्था, अंधविश्वास में लिप्त है.....दूसरा उनको धर्म के भव सागर में धकेल दूँगा.। फिर वो आपस में एक दूसरे से लड़ते रहेंगे.. हिन्दु-मुस्लमान करते रहेंगे... और खुद ही वो एक दूसरे के लिए खतरा बन जाऐंगे... और सबको नजर आने लेगेगा.... अपना-अपना धर्म खतरे में..... हा हा हा...।

भारती- और मैं हमेशा प्रयत्न करती रहूँगी और गीत गाती रहूँगी-

मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर में बाँट दिया भगवान को.....

धरती बाँटी, सागर बाँटा, मन बाँटो इन्सान को.....

हिन्दू कहता मन्दिर मेरा, मन्दिर मेरा धाम है....

मुस्लिम कहता मक्का मेरा अल्ला का इमान है.....

दोनों लड़ते लड-लड मरते लड़ते-लड़ते खत्म हुए.....

दोनों ने एक दूजे पर न जाने क्या-क्या जुल्म किये.....

किस का है ये मक्सद, किसकी चाल है ये जान लो.....

स्वार्थी बाजार- ठीक है भारती तुम जीती। तो दर्शको आपने देखा भारती कठपुतली होकर सब कुछ समझ रही है। आप भी समझो। जाति धर्म के नाम पर हमें लड़ाया जाता है। हमें इस षडयंत्र को समझना है। और इसका जवाब है हमारी एकता।

दोषियों को फाँसी की सजा मिलनी चाहिए

✍मधु देवी
कल्पना स्वयं सहायता समूह घटकोट

यह बड़ी दुख की बात है कि देवभूमी कहे जाने वाले उत्तराखण्ड में भी घिनौने काम हो रहे हैं। यहाँ पर मैं बात कर रही हूँ, अंकिता भण्डारी की, जिनकी हत्या की गयी है। कुछ लोगों के कारण हमारा पूरा उत्तराखण्ड बदनाम हो रहा है। आज जो अंकिता भंड़ारी के साथ हुआ वह कल किसी और लड़की के साथ न हो इसके लिए हम सब को आवाज उठानी ही होगी। आप सभी को इस हत्या काण्ड के बारे में पता ही होगा। मैं आप सभी से श्रमयोग पत्र के माध्यम से बस इतना कहना चाहती हूँ कि अंकिता को इन्साफ मिले, और उसके साथ ऐसा घिनौना काम करने वालों को बस फाँसी की सजा मिलनी चाहिए, सरकार को कोई ठोस कदम उठाना चाहिए।

एक लघु संस्मरण

दस्तक देता वानप्रस्थ और मेरा मन

✍हरि राज सिंह

रोजमर्रा की तरह प्रातःकाल छः बजे बिस्तर से उठा, पर आज मन कुछ अनमना सा था। शायद मानस में सारी रात का अंतर्द्वंद और कौतूहल कुछ विचलित सा करे हुए थे। खैर, थोड़ा अपने को संभाला और जीवन की वही दैनिक दिनचर्या शुरू की, चाय बनाना, दूध उबालना और बीच में व्हाट्सएप पर मित्रों व सगे-संबंधियों के बारे में कुछ-कुछ जानना और साझा करना।

पर आज मन कुछ सपाट सा था, पता नहीं शायद आने वाले समय की कोई दस्तक वह महसूस कर रहा था। खैर छोड़िए, नाश्ते का समय हुआ, मैंने पिताजी से अपने चिर-परिचित अंदाज में पूछा क्या खाओगे? मेरे पिताजी ने कुछ उलझे हुए मन से पूछा, क्या है? मैं समझ गया कि 82 वर्ष की आयु में जीर्ण होते शरीर में अब बहुत सी आशाएं और संभावनाएं अपने आप को अनंत में समर्पित कर चुकी हैं। मैंने उनका काम आसान किया और पूछा, आलू की रोटी खाओगे या बथुए की रोटी? चेहरे की दुविधा को पढ़ते हुए, मैंने उसे हल करने के लिए तुरंत पूछा कि बथुए के पराठे खाओगे। सुनते ही उनकी आंखों में एक चमक सी आई! और वह मैं जानता भी था कि वर्षों से उन्हें जाड़ों में बथुए के पराठे बहुत पसंद हैं। वह तो मैंने वैसे ही पूछा जिससे कि उनके मन में जीवन संचालित करने वाले भोजन के प्रति उत्सुकता बनी रहे। फिर उनको दो गरमा-गरम पराठे, अदरक की चाय के साथ दिए। सारी जीवन सार यही तो है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक। अनायास ही पिताजी के मुख से 'बहुत बढ़िया, बड़ा मजा आया' शब्द निकले और मानो मेरी बहुत सारी मनोव्यथाएं अपने आप शांत हो गईं। पर क्या ये वास्तव है या भ्रम?

मेरी चेतना ने जैसे ही अचानक से मेरे समकक्ष खड़े हो कर ये पूछा तो मेरा सारा सामाजिक वर्तमान बिजली की गति से मेरे समक्ष परिलक्षित हो गया। और फिर वही बहुत से अनुत्तरित यक्ष प्रश्न मानस पटल पर कौंध गए कि पाश्चात्य सभ्यता को अनुसरण करते-करते मानव सभ्यता से कितने दूर निकल गए हम लोग, आदि-आदि। युग बदला, वर्तमान बदला, पर कुछ न बदला तो वो है मन! कितना भी चपल-चंचल क्यों न माने हम इस मन को, पर स्थिरता पाता है अपनों के रिश्तों की गर्माहट में ही। वानप्रस्थ की आहट में ये रिश्तों की गर्माहट भरी चादर क्या सकून के वो पल हमें नसीब करा पाएगी, ये तो वक्त ही बताएगा। वो कल के आंगनों का ताना-बाना क्या कल के ताने-बाने में प्रतिबिंबित हो पाएगा, शायद ये हमारी वर्तमान की संवेदनाओं व मनोवृत्तियों पर निर्भर करेगा.....और अचानक ही श्रुतिपटों पर घर की घंटी की ध्वनि सुनाई पड़ी, और मैं विचारों की विलासिता से मुक्त हो कूड़े वाले को घर का कूड़ा देने दौड़ पड़ा, आखिर अभी जीवन से जुड़ी पूरे दिन की अनेकों-अनेक क्रियाएं भी तो संपन्न करनी हैं!

महिलाओं पर अत्याचार आखिर कब तक ?

✍पूजा चौनियाल
ग्राम मैठानी

हस सभी जानते हैं हमारा देश भारत पूरे विश्व में अपने विविध रीति-रिवाज तथा संस्कृति के लिए विख्यात है। भारत में प्राचीन काल से ही यह परंपरा रही है महिलाओं को समाज मे विशिष्ट आदर एंव सम्मान दिया जाए, यहाँ तक की महिलाओं को देवी, लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है। तो क्या यह इज्जत और सम्मान सिर्फ किताबों या धार्मिक आयोजनों तक सीमित है।

आखिर हमारे देश में महिलाएं तथा बेटियां कैसे सुरक्षित रह सकती हैं? जहाँ आज सरेआम गालियां माँ और बहनों की दी जाती है, तो कैसे हम एक सभ्य समाज की कल्पना कर सकते हैं। आज स्कूल तथा कॉलेज जाने वाली लड़कियां भय के साये में जी रही हैं, इसका ताजा उदाहरण अकिंता भण्डारी मर्डर केस है। आज राह चलती लड़की पर तेजाब फैंकना तथा अपनी हवस मिटाने के लिए उसका अपहरण करना, एक आम बात हो गयी है। 21 वी सदी में भी ऐसी घटनाओं का होना मानवता और हमारे देश की संस्कृति को शर्मसार करता है। यह सब सोचनीय विषय है कि हमारा समाज आज किस ओर जा रहा है। निर्भया से लेकर अकिंता और अब तक न जाने कितनी ही लड़कियां और महिलाएं ऐसे दरिंदों का शिकार हो गयी होगीं। जिसके साथ ऐसी घटना हो जाती है उसके तस्वीर के आगे मोमबत्ती एंव दिये जलाने से कुछ नहीं होगा। आज अकिंता के साथ हुआ है कल किसी और के साथ होगा। सरकार को जल्दी निर्णय लेकर अपराधियों को सख्त सजा देनी चाहिए। अपराधी चाहे किसी भी पार्टी का क्यों न हो चाहे अमीर हो चाहे गरीब अपराधी अपराधी ही होता है। हमें एक सभ्य समाज का निर्माण करना है, तथा समाज में महिला के अधिकारों के प्रति उन्हें जागरुक करना है। इसके लिए सभी को एक संगठन में रह कर ऐसी घटाओं के खिलाफ आवाज उठानी होगी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)